कर्नाटक सरकार

सार्वजनिक शिक्षा विभाग

हिन्दी वल्लरी

स्मरण

सेवारत हाईस्कूल के हिन्दी शिक्षकों का हिन्दी प्रशिक्षण साहित्य

2016–17

ಡಿಎಸ್ಇಆರ್‌ಟಿ
DSERT

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

नं. 4, 100 फीट रिंग रोड, बनशंकरी तीसरा स्टेज, बेंगलूरु –560085

और

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान – कर्नाटक

मार्गदर्शन :

1. श्री बेल्लशेट्टी निदेशक, डी.एस.ई.आर.टी. बेंगलूरु ।
2. श्री गोपालकृष्ण एच.एन. सह निदेशक, डी.एस.ई.आर.टी. बेंगलूरु ।
3. श्रीमती जलजाक्षी उप निदेशक, डी.एस.ई.आर.टी. बेंगलूरु ।
4. डॉ. बी. नरसिंहमूर्ति प्राचार्य, मालवा संध्या कॉलेज, बसवेश्वर नगर, दोड्डबल्लापुर ।
5. श्रीमती उषा एम.डी. वरिष्ठ सहायक निदेशक, डी.एस.ई.आर.टी. बेंगलूरु ।

अध्यक्ष

1. डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, बेंगलूरु विश्वविद्यालय, बेंगलूरु ।

रचना समिति के सदस्य

1. श्रीमती चंद्रकला एच.एस. प्रधान अध्यापिका, सरकारी हाईस्कूल, मारेनहल्ली, बेंगलूरु।
2. श्री शशिधर सिंह एस. हिन्दी अध्यापक, सरकारी हाईस्कूल हिरेहल्लीकोप्पलु, होलेनरसीपुर–ता, हासन–जिला ।
3. श्री वासुदेव मूर्ति एस. हिन्दी अध्यापक, सरकारी हाईस्कूल उद्भूरु, मैसूर–जिला ।
4. श्री डी.आर. शिवशंकर, हिन्दी अध्यापक, सरकारी हाईस्कूल कानले,सागर–ता, शिवमोग्गा–जिला ।
5. डॉ. सुनील परीट, हिन्दी अध्यापक, सरकारी हाईस्कूल लक्कुंडी, बेलगाँव–जिला ।
6. डॉ.राजेंद्र संगावे, हिन्दी अध्यापक, सरकारी हाईस्कूल शेगुणसी, चिक्कोडी–शै. जिला ।

भूमिका

एन.सी.एफ.–2005 और आर.टी.ई.–2009 आने के बाद शिक्षा क्षेत्र में बहुत बडी क्रांति ही हुई है। आज स्थिति ऐसी बन पडी है कि छात्र परीक्षा लिखकर, अंक पाना चाहता है मगर अंक पाना ही शिक्षा का लक्ष्य नहीं है। छात्र को पता भी नहीं चलता कि कब उसकी परीक्षा की जाती है। परीक्षा यानी सिर्फ लिखित परीक्षा तक ही सीमित नहीं है। छात्र क्या–क्या सीख रहा है, क्या कुछ नहीं सीखा? क्यों नहीं सीख पाया? इसके कारण क्या हैं? इसपर ध्यान देना पडता है। शिक्षा का गुणात्मक परिणाम पाने के लिए सबसे पहले अध्यापकों को जिम्मेदारियों को समझना चाहिए और जिम्मेदारियों को पूर्ण रुप से निभाना चाहिए।

पिछले कई सालों से हम रचनावाद और सी.सी.ई. के तहत गुणात्मक शिक्षा देने के लिए प्रयास कर रहे हैं, उसमें कुछ हदतक सफल भी हुए हैं। इसके लिए अनेक सरकारी संस्थाएँ, अधिकारी वर्ग, शिक्षाविद, अध्यापक और पोषकों का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसी दिशा में आर.एम.एस.ए. (राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान) के माध्यम से आज हिन्दी विषय से संबंधित प्रशिक्षण की योजना तैयार की गई है। हिंदी विषय को छात्रों को समझने में आसान तथा रोचक बनाने की दिशा में यह कदम उठाया गया है।

इस दिशा में मेरे खयाल से यह जो प्रशिक्षण साहित्य तैयार हुआ है, यह अत्यंत उपयुक्त होगा । इसे तैयार करने में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बेंगलुरु के निदेशक श्री बेळ्ळशेट्टी जी, श्रीमती एन. जलजाक्षी उपनिदेशक, श्रीमती एम. डी. उषा जी वरिष्ठ सहनिदेशक, सभी सदस्यगण और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से जिन्होंने मार्गदर्शन और सहयोग दिया है उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

इस आशय के साथ आप लोगों के हाथ में रख रहे हैं यह प्रशिक्षण साहित्य सभी अध्यापकों को अपने अधिगम (सीखना–सिखाना) प्रक्रिया में बहुत ही सहायक होगा ।

अध्यक्ष

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय	पृष्ठ संख्या
1	प्रशिक्षण साहित्य का परिचय	5
2	शिक्षण की विधियाँ	7
3	साहित्य की विधाएँ	9
4	गद्य साहित्य	9
5	गद्य शिक्षण की विधियाँ	11
6	कहानी	12
7	आत्मकथा	15
8	एकांकी	20
9	यात्रा वर्णन	23
10	व्यंग्य रचना	24
11	जीवनी	30
12	निबंध	34
13	रेखाचित्र	39
14	पद्य शिक्षण	45
15	आधुनिक कविता शिक्षण विधियँ	48
16	प्राचीन पद्य – पद	54
17	दोहे	57
18	व्याकरण शिक्षा	61
19	टिप्पणियाँ	77
20	भाषाई कौशल	80
21	रचनात्मक मूल्यांकन के लिए आधार बिंदुएँ	87
22	सहायक सामग्री	93
23	अपठित गद्यांश	94
24	अनुवाद	95
25	कक्षानुरूप व्याकरण	96

प्रशिक्षण साहित्य का परिचय

सेवारत शिक्षकों को उनके अध्यापन कार्य में गुणवत्ता को उभारने के लिए उन्हें सबसे पहले अपनी जिम्मेदारियों को समझना चाहिए और जिम्मेदारियों को पूर्ण रूप से निभाना भी चाहिए। जब वे कार्य में इस ओर अग्रसर होंगे तब उन्हें सफलता मिलेगी। तब शिक्षकों को अपनी कार्य में संतोष प्राप्त होगा। इसे दृष्टि में रखकर अध्यापन कार्य को सार्थक बनाने के लिए अनेक प्रकार की विधियों को ढूँढने का प्रयास जारी है। शिक्षा–विभाग भी सेवारत शिक्षकों को उनके अध्यापन कार्य को प्रभावी बनाने हेतु अनेक प्रकार के प्रशिक्षणों को समय–समय पर आयोजन करते आ रहा है। इसके साथ विषय से संबंधित संसाधन साहित्य को छपाकर अध्यापकों को देने का कार्य भी कर रहा है। इसी मार्ग में प्रस्तुत प्रशिक्षण साहित्य आपके हाथ में है। वैश्विक स्पर्धा में होड़ लगाने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करने का दायित्व शिक्षकों पर है। शिक्षक इसलिए अपने विचारों में सामयिक बनना नितांत आवश्यक है।

इस साहित्य में निहित अंश :

शिक्षण विधियों का परिचय कराते हुए वर्तमान संदर्भ में उपयोग करने हेतु योग्य शिक्षण विधियों को समझते हुए रचनात्मक मूल्यांकन करने के संदर्भ में उपयोगी प्रविधियों और साधनों का विस्तृत परिचय कराने की कोशिश इस साहित्य में हुई है।

गद्य/ पद्य पाठ की विधाओं का परिचय : 8वीं से 10वीं तक कक्षा की पाठ्य–पुस्तकों में निहित कहानी, निबंध, आत्मकथा जैसी विधाओं और पद्य में प्राचीन और आधुनिक कविताओं का परिचय देने का प्रयास किया गया है। इन विधाओं को पढ़ाने के संदर्भ में सामना करने वाले सवाल, आयोजित करनेवाले क्रिया–कलाप, प्रणालियों का परिचय और मूल्यांकन करने की रीतियों का परिचय भी यहाँ देने का प्रयास किया गया है।

व्याकरणांश अध्यापन विधियों का परिचय: 8वीं से 10वीं तक कक्षा की पाठ्य–पुस्तकों में निहित व्याकरणांशों को पढ़ाने के संदर्भ में सामना करनेवाले सवाल, आयोजित करने वाले क्रिया–कलाप और प्रणालियों और रचनात्मक मूल्यांकन की विधियों का परिचय कराने का प्रयास किया गया है।

भाषा–कौशल विकसित करने की विधियों का परिचय: भाषाई कौशल – सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना– इन कौशलों को विकसित करने के लिए अपनाने वाली विधियाँ, क्रिया–

कलापों का आयोजन और मूल्यांकन संबंधी विचारों को इस प्रशिक्षण साहित्य में सम्मिलित किया गया है।

सहायक सामग्रियों का निर्माण : सहायक सामग्रियों का महत्व बताकर उचित सामग्री की तैयारी कर उनके समुचित प्रयोग के बारे में जानकारी दी गयी है ।

अध्यापन – संदर्भ में तकनीकियों का प्रयोग: कोयर, एस. टी. एफ. आदि तंत्रांश प्रयोग करके उपयुक्त शिक्षण–सामग्रियों का चयन करने की विधियों का परिचय कराने का प्रयत्न किया गया है।

‘माना अन्य भाषाएँ सीखना हमारी आवश्यकता है, परंतु अपनी राष्ट्रभाषा को सम्मान देना हमारा प्रथम कर्तव्य है ।’

शिक्षण की विधियाँ

जिस ढ़ंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं । 'शिक्षण विधि' शब्द का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है । एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियों एवं योजनाओं को सम्मिलित की जाती है, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी क्रियाओं को भी सम्मिलित की जाती है । कभी–कभी लोग युक्तियों को भी विधि मान लेते हैं, परंतु ऐसा करना भूल है । युक्तियाँ किसी विधि का अंग हो सकती है, संपूर्ण विधि नहीं । एक ही युक्ति अनेक विधियों में प्रयुक्त हो सकती हैं ।

विधियों का परिचय :

निगमनात्मक तथा आगमनात्मक विधिः

पाठ्य विषय प्रस्तुत करने के दो ढ़ंग हो सकते हैं । निगमनात्मक विधि में छात्रों को कोई सामान्य सिद्धांत बताकार उसकी जाँच या पुष्टी के लिए अनेक उदाहरण दिये जाते हैं । आगमनात्मक विधि में पहले अनेक उदाहरण देकर छात्रों से कोई सामान्य नियम निकलवाया जाता है ।

संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि :

दूसरे दृष्टिकोण से शिक्षण विधि दो अन्य प्रकार हो सकते हैं । पाठ्य वस्तु को उपस्थित करने का ढ़ंग यदि ऐसा है कि पहले अंगों का ज्ञान दे कर तब पूर्ण वस्तु का ज्ञान कराया जाता है । तो उसे संश्लेषणात्मक विधि कहते हैं । हिन्दी पढ़ाने में पहले वर्णमाला सिखाकर बाद में शब्द और वाक्य का ज्ञान दिया जाता है । वाक्य पहले सिखाकर बाद में शब्द और वर्ण सिखाया जाए तो उसे विश्लेषणात्मक विधि कहते हैं ।

वस्तु विधि :

शिक्षण का प्रसिद्ध सूत्र है 'मूर्त से अमूर्त की ओर' वस्तव में हमें बाहय संसार का ज्ञान अपनी ज्ञानेंद्रियों के द्वारा होता है । जिनमें नेत्र प्रमुख हैं । बच्चों को पढ़ाने के लिए वस्तुओं का प्रदर्शन करके उनके विषय में ज्ञान प्रदान किया जाता है । यहाँ तक कि अमूर्त को भी मूर्त बनाने का प्रयास किया जाता है ।

दृष्टांत विधि :

वस्तु विधि का एक दूसरा रूप है –दृष्टांत विधि । वस्तुविधि में जिस प्रकार वस्तुओं के द्वारा ज्ञान प्रदान दिया जाता है । दृष्टांतविधि में दृष्टांत दृश्य भी हो सकते हैं और श्रव्य भी ।

कथनविधि एवं व्याख्यानविधि :

वस्तु एवं दृष्टांतविधियों से ज्ञान प्राप्त करते करते जब बच्चों को कुछ अनुमान करने तथा अप्रत्यक्ष वस्तु को भी समझने का अभ्यास हो जाता है, तब कथनविधि का सहारा लिया जाता है । व्याख्यानविधि में 'बच्चों को कम से कम बतलाना चाहिए, उन्हें अधिक से अधिक स्वतः ज्ञान द्वारा सीखना चाहिए ।'

प्रश्नोत्तर विधि :

इसमें प्रश्नकर्ता से ही प्रश्न किए जाते हैं और उसके उत्तरों के आधार पर उसी से प्रश्न करते करते अपेक्षित उत्तर निकलवा लिया जाता है ।

करके सीखना :

करके सीखना अर्थात स्वानुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करना । आजकल का सर्वाधिक व्यापक सिद्धांत है । शिक्षाशास्त्रियों ने बच्चों की ज्ञानेंद्रियों को अधिक कार्यशील बनाने तथा उनके द्वारा शिक्षा देने पर इस विधि पर विशेष बल दिया है ।

शोधविधि :

इस विधि में छात्रों उपयुक्त वातावरण में रखकर स्वयं किसी तथ्य को ढूँढने प्रेरित किया जाता है । अध्यापक छात्रों को योग्य मार्गदर्शन करते रहते हैं और उसे गलत रास्ते से हटाकर सीधे रास्ते पर लाते रहते हैं ।

प्रोजेक्ट विधि :

इस विधि के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वाभाविक वातावरण अधिक उपयुक्त होता है । इस विधि से पढ़ाने के लिए पहले कोई समस्या ली जाती है । जो प्रायः छात्रों के द्वारा उठाई जाती है और उस समस्या का हल करने के लिए उन्हीं के द्वारा योजना बनायी जाती है और स्वाभाविक वातावरण में योजना पूर्ण किया जाता है ।

डाल्टन योजना :

विधि कक्षाशिक्षण के दोषों को दूर करने के लिए आविष्कृत की गई थी । डाल्टन योजना में कक्षा भवन का स्थान प्रयोगशाला ले लेती है । प्रत्येक विषय की एक प्रयोगशाला होती है जिसमें उस विषय के अध्ययन के लिए पुस्तकें, चित्र, मानचित्र तथा अन्य सामग्री के अतिरिक्त संदर्भग्रंथ भी रहते हैं । विषय का विशेषज्ञ अध्यापक प्रयोगशाला में बैठकर छात्रों की सहायता करता, उनके कार्यों का संशोधन तथा जाँच करता है । कुछ कार्यों को भागों में बाँटकर

निर्धारित कार्य(असाइनमेंट) के रूप में प्रत्येक छात्र को लिखित दिया जाता है । छात्र उस निर्धारित कार्य को अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न प्रयोगशालाओं में जाकर पूरा करता है ।

साहित्य की विधाएँ

विधा का साधारण अर्थ प्रकार, किस्म, वर्ग या श्रेणी है । यह शब्द विविध प्रकार की रचनाओं को वर्ग या श्रेणी में बाँटने से उस विधा के गुण धर्मों को समझने में सुविधा होती है । यह वैसे ही है जैसे जीव विज्ञान में जीवों का वर्गीकरण किया जाता है । उदाहरण के लिए हम कहते हैं कि निबंध गद्य की विधा है ।

साहित्य की विधाएँ इस प्रकार हैं :

संस्कृत साहित्य के आचार्यों ने समूचे साहित्य को **दृश्य काव्य** और **श्रव्य काव्य** – इन दो भागों में विभाजित किया है ।

1) दृश्य काव्य – इसमें चक्षुओं के द्वारा रसस्वादन किया जाता है । जैसे : नाटक (रूपक और उपरूपक, एकांकी) है ।
2) श्रव्य काव्य में श्रवणेंद्रियों द्वारा रसस्वादन किया जाता है । जैसे :पद्य में महकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक, तुकांत, अनुकांत आदि और गद्य में लघुकथा, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, गद्यकाव्य आलोचना तथा समीक्षा आदि हैं । इन सभी विधाओं मेम सृजनात्मक तथा विचारात्मक साहित्य दीर्घकाल से निरंतर विद्वानों द्वारा लिखा जा रहा है ।

गद्य साहित्य

सामान्यतः मनुष्य की बोलने या लिखने पढ़ने की छंद रहित साधारण व्यवहार की भाषा को गद्य कहा जाता है । साधारण व्यवहार की भाषा भी गद्य तभी कही जा सकती है जब यह व्यवस्थित और स्पष्ट हो । गद्य का प्रारंभ इतिहास, विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र इत्यादि की भाषा के रूप में हुआ । बाद में वह उपयोग से कला की ओर प्रवृत्त हुआ । विषयों के अनुसार गद्य में प्रवाह, स्पष्टता, चित्रमयता, लय, व्यक्तिगत अनुभूति, अलंकरण इत्यादि की मात्राओं में हेर फेर का होना आवश्यक हैं, किन्तु गद्य की कोटियों के बीच दीवारें नहीं खड़ी की जा सकती । लेखक की रुचि और प्रयोजन के अनुसार वे एक दूसरे में अंतः प्रविष्ट होती रहती है ।

गद्य शिक्षण की विशेषताएँ :

- गद्य में उत्कृष्ट एवं परिमार्जित भाषा का प्रयोग होता है ।
- गद्य वही श्रेष्ठ है जिसमें भावग्रहणता हो ।
- गद्य की विभिन्न विधाओं के अनुरूप इसकी भाषा में अंतर होता है ।
- उचित आरोह–अवरोह व विराम चिहनों का प्रयोग ही गद्य को वाचन की योग्यता प्रदान करते हैं ।
- पाठ्यपुस्तकों में निहित गद्य की भाषा मानसिक बौद्धिक व तार्किक शक्ति के अनुरूप होनी चाहिए ।

गद्य शिक्षण के उद्देश्य:

- ➢ भाषा के प्रति अभिरुचि जागृत करना ।
- ➢ गद्य शुद्ध वाचन की योग्यता प्रदान करना ।
- ➢ गद्य लेखकों और गद्य लेखन की शैली –मुहावरे, लोकोक्तियों, सूक्ति आदि के बारे में जानकारी के साथ–साथ लेखन में उसके प्रयोग की क्षमता प्रदान करना ।
- ➢ लेखक के भाव–विचार को समझ उसके गुणदोष का विवेचनकर आदर्शों को स्वीकार कर अपनी कल्पना बुद्धि को विकसित कर रचनात्मक शक्ति का विकास करना ।
- ➢ परस्पर संवाद करने भाषण देने एवं पत्र लिखने की कुशलता हासिल कर सामाजिक जीवन में अपना प्रभाव डालने में समर्थ बनाना ।
- ➢ वर्तमान के विषयों, सूचनाओं और समसामयिक समस्याओं का बोध कर सभ्य व सुसंस्कृत जीवन जीने योग्य बनाना ।

गद्य शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व :

- ❖ एक दूसरे के विचारों को सही रूप में सरलता से ग्रहण करवाने हेतु ।
- ❖ बौद्धिक विकास कराने हेतु ।
- ❖ भाषा शिक्षण के अधिकांश उद्देश्यों की पूर्ति करवाने हेतु ।
- ❖ भाषाई कौशलों के अभ्यास कराने के लिए ।
- ❖ विविधतापूर्ण विषय सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु ।

गद्य शिक्षण की विधियाँ :

1. पाठ्य पुस्तक विधि :

यह विधि वर्तमान में अधिक प्रचलित है । जिसमें पाठ्य पुस्तक विषय वस्तुएँ एवं शब्दावली का समुचित वर्गीकरण प्रत्येक कक्षा के लिए अलग–अलग तैयार किया जाता है । जहाँ शिक्षक सर्व प्रथम गद्य खंड का आदर्श वाचन करता है । तत्पश्चात छात्र उनका अनुकरण वाचन करते हैं ।

2. व्याख्या विधि :

इस विधि में शिक्षक प्रस्तुत गद्य खंड या अनुच्छेद को पढ़ाता हुआ एक–एक पद स्पष्ट करता है । कठिन शब्दों को प्रत्यय, उपसर्ग, समास विग्रह संधि विच्छेद आदि के द्वाराअ स्पष्ट किया जाता है ।

3. प्रत्यक्ष विधि :

उपकरणों का प्रदर्शन करके विषय को अवगत कराया जाता है ।

4. चित्र विधि :

महापुरुषों, नगरों, यात्रा आदि विषयों पढ़ाते समय उससे संबंधित चित्र दिखाकर विचार स्पष्ट कराया जाता है ।

5. **अभिनय विधि** : कहानी, आत्मकथा, जीवनी जैसे गद्य विधियौं को सिखाते समय इस विधि को अपनाया जा सकता है ।

6. **शब्दार्थ द्वारा** :
समानार्थक शब्दों का प्रयोग कर सरल रूप से विषय को समझाना ।

7. **प्रयोग विधि :**
इस विधि द्वारा प्रसंग का अर्थ व प्रयोग समझाना ।

8. सरल परिचित शब्दों के द्वारा परिभाषा या व्याख्या करना ।

> नई चीज सीखने की जिसने आशा छोड़ दी वह बूढ़ा है ।

मौसी (कहानी)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1. कहानी, उसके उद्देश्य का परिचय कराना ।
2. लेखक भीष्म साहनी जी का परिचय कराना ।
3. निस्वार्थ सेवा के बारे में बताना ।
4. सेवा परायणता को अवगत कराना ।
5. मौसी, दादा–दादी, नाना–नानी जी के प्यार भरी कहानियाँ सुनाने का कौशल बढ़ाना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* कहानी का अर्थ बताकर उसके उद्देश्यों को समझाना ।
* लेखक भीष्म साहनी जी के परिचय को पाठांश द्वारा समझाना ।
* मौसी पाठांश द्वारा मौसी की निस्वार्थ सेवा के बारे में छात्र अवगत कर लेंगे । जैसे: किसी घर में बच्चा बीमार होता तो मौसी का वहाँ पहुँचना, बच्चों के साथ रहना, उनको खिलाना, उनकी देखभाल करना आदि ।
* सेवा क्या होती है? सेवा मनोभाव को अपनाने के बारे में छात्रों से ही कहलवाना व अन्य छात्रों को समझाना ।
* अपने घर के अनुभवों को याद कर कहानियाँ सुनाने का अभ्यास कराना व मौसी, दादा–दादी, नाना–नानी जी से सुनी कहानियों को सुनवाना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- ❖ निस्वार्थ सेवा
- ❖ कृतज्ञता
- ❖ सहायता
- ❖ सभ्यता
- ❖ सरल जीवन

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) पुस्तक पठन प्रणाली : छात्र पाठांश को खुद पढ़ते हैं । कहानी का सार समझने का प्रयास करते हैं और कहानी का सार बताने का प्रयास भी करते हैं ।

2) प्रश्नोत्तर प्रणाली : छात्रों को समूहों में बाँट कर आपस में चर्चा करने अवसर देना है । एक समूहवाले प्रश्न पूछेंगे तो दूसरे समूहवाले उत्तर देंगे इसी प्रकार पाठांश का सार समझाना चाहिए ।

3) कथा प्रणाली : छात्र पाठांश को समझकर मनोरंजक रूप से कहानी को रोचकता के साथ व्यक्त करते हैं ।

* कहानी सुनाने के अलग अलग तरीके होते हैं जैसे : सस्वर वाचन द्वारा कहानी सुनाना, पात्र का मुखौटे पहनकर कहानी सुनाना, चित्र देखकर कहानी पूर्ण करना लकड़ी चित्र द्वारा कहानी का वर्णन करना, क्रमानुगत वाक्यों में कहानी जोड़कर बोलना, सचित्र कार्ड की सहायता से कहानी का विवरण देना । मूकाभिनय द्वारा कहानी समझाना, अनुवाद द्वारा कहानी सुनाना, कटपुतली चित्रों द्वारा कहानी समझाना आदि ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : पुस्तक पठन प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न लिखित आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

* पढ़ने में रुचि
* अर्थ की दृष्टि से मुख्यांशों को ग्रहण करना
* भावानुकूल एवं अवसर के अनुकूल पढ़ना
* उचित गति से पढ़ना
* समग्र प्रस्तुतीकरण

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) दिन भर मौसी कहाँ बैठी नज़र आती थी ?
2) मौसी कौन–कौन सी कहानियाँ सुनाती थी ?
3) ‘यह मेरा बेटा, यह मेरी बेटी’ इस वाक्य को किसने कहा? किससे कहा?
4) मौसी बच्चों के साथ क्या–क्या करती थी ?
5) मौसी पाठ का आशय क्या है ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

कहानी : "कहानी साहित्य की एक विधा है वह काल्पनिक आख्यान के माध्यम से स्थूल अथवा सूक्ष्म भावात्मक प्रभाव की एकांगिता का अनुसंधान करती हुई अपनी एकाग्र दृष्टि से जीवन का एक खण्ड–चित्र, झलक या झाँकी देती है ।" कहानी जीवन की ऐसी प्रभावपूर्ण झलक है, जो किसी एक ही मार्मिक प्रसंग, भाव या विचार के उद्घाटन द्वारा अपनी संपूर्ण एकात्मकता में, पाठक को चमत्कृत कर देती है । वह उपन्यास के समान जीवन के समग्र को नहीं, उसके एक मार्मिक पक्ष को, उसके मार्मिक स्थल पर छूती है ।

"कहानी जीवन की एक ऐसी बिन्दु को ग्रहण करती है, जहाँ दृष्टि केन्द्रित करने पर समस्त जीवनरेखा प्रकाशित हो उठती है |" युग–युगों से कहानी कहने की प्रेरणा मानव की मूलप्रवृत्तियों में रही है । कहानियों का मूल लक्ष्य कुतूहल सृष्टि करता रहा है ।

मुंशी प्रेमचंद जी का कथन है कि "गल्प एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है । उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा–विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं ।" कहानी का लक्ष्य चाहे कुछ हो उसमें भाव, विचार या वस्तु के प्रभाव की अभिव्यक्ति की जाती है । इस कथा–भाग को कहानी की 'कथावस्तु' कहते हैं । प्रत्येक कहानी की रचना में कोई न कोई लक्ष्य या उद्देश्य भी अवश्य निहित रहता है । इस प्रकार कहानी के छः तत्व होते हैं– 1) कथावस्तु 2) पात्र और चरित्र–चित्रण 3) संवाद 4) वातावरण 5) भाषा–शैली तथा 6) उद्देश्य।

6} **संदर्भ सूची :**

कहानी : साहित्यालोचन, लेखक :प्रो. भारत भूषण सरोज, डॉ कृष्णदेव शर्मा ।

किसी कार्य का आरंभ
उसका सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है ।

–प्लेटो

मेरा बचपन (आत्मकथा)

पाठांश : इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- अब्दुल कलाम जी का आदर्श जीवन
- आत्मकथा का परिचय कराना
- परिवार, मित्र, संबंधियों के साथ इनका स्नेह भाव समझाना
- धार्मिक ऐक्यता और धर्मिक विषयों से शांति प्राप्ति के बारे में समझाना
- पुस्तकों को पढ़ने से मिलनेवाली प्रेरणा व लाभ के बारे में बताना (ग्रंथालय का उपयोग)
- बड़ों का आदर करना और उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना सिखाना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* भारत के श्रेष्ठ वैज्ञानिक और राष्ट्रपति के रूप में छात्र कलामजी का परिचय प्राप्त कर चुके होते हैं उसका पुनर्मनन कराना ।

* गद्य विधाओं में आत्मकथा का परिचय कराना । आत्मकथांश की विशेषता के बारे में समझाना ।

* कलामजी के अपने माता-पिता के साथ के व्यवहार से प्रेरित होकर छात्र अपने माता-पिताओं के साथ करनेवाले व्यवहार का विचार बाँट लेने का अवसर देना ।

* हिंदू, मुस्लिम बंधुओं के प्रति स्नेह, सौहार्दता को पाठांश द्वारा समझाना । मित्रता से हम जीवन में बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं इससे अवगत कराना ।

* कलाम जी अध्यमिक विचारों से संबंधित विचारों की चर्चा अपने पिताजी के साथ करते थे, उन विचारों में तादात्म्य दिखाकर धार्मिक विचारों से शांति की प्राप्ति के बारे में बताना ।

* पाठांश द्वार कलामजी की पढ़ाई के बारे में बताकर समाचार पत्र और समूह माध्यमों से हमें हमेशा नये-नये विषयों को पढ़ते रहना नितांत आवश्यक है, इसका महत्व समझाना ।

* पाठांश द्वारा कलामजी के विचारों से प्रेरित होकर बड़ों का आदर करना, मार्गदर्शन पाना कृतज्ञता व्यक्त करना सिखाना चाहिए । महापुरुषों की आत्मकथा हमारे जीवन को एक नयी दिशा प्रदान करती है ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- बड़ों का आदर
- मानवीय ऐक्यता
- भ्रातृत्व भाव
- परस्पर सहानुभूति
- सभ्यता
- समानता
- सर्वधर्म गौरव
- श्रम–गौरव

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) चर्चा प्रणाली : पाठ के अनुच्छेदों को समूहों में बाँट कर चर्चा करवाना । छात्र स्वयं पढ़कर चर्चा करते हैं और अपने शब्दों में विचार व्यक्त करते हैं ।

2) अभिनय वाचन : हर एक छात्र को अनुच्छेद बाँट देना, छात्र कलाम जी का चित्र लटकाकर कलाम बनकर वाचन करता है । दूसरे छात्र उसका अर्थ बताते हैं ।

3) स्वाध्याय प्रणाली : छात्र कक्षा में बैठकर पाठांश का स्व अध्ययन करेंगे और शब्दों के अर्थ समझने का प्रयास करेंगे ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : चर्चा प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- चर्चा में अभिरुचि
- नेतृत्व भाव
- दूसरों का सुनना
- स्पष्ट उच्चारण
- अभिव्यक्ति शैली

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) अब्दुल कलाम के बचपन में दुर्लभ वस्तु क्या थी ?

2) जैनुलाबदीन नमाज के बारे में क्या कहते थे ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

*** आत्मकथा क्या है?**

आत्मकथा साहित्य की एक सरल संस्मरणात्मक विधा है, किन्तु यह संस्मरण से भिन्न विधा है । यह स्वानुभूति का सबसे सरल माध्यम है । इसमें लेखक अपने जीवन परिवेश, महत्वपूर्ण घटना, विचारधारा, निजी अनुभव अपनी क्षमता और दुर्बलता तथा अपने स्मय की सामाजिक राजनैतिक स्थिति को पाठकों के सम्मख प्रस्तुत करना है ।

डॉ. गोविंद त्रिगुणायत के मत में "आत्मकथा, लेखक के जीवन की दुर्बलताओं, सबलताओं आदि का वह संतुलित और व्यवस्थित चित्रण है जो उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्घाटन में समर्थ होता है ।" हिन्दी साहित्य में आत्मकथाओं की रचना बहुत कम हुई है। उपलब्ध साहित्य की प्रवृत्तियों के आधार पर वर्गीकरण इस प्रकार है – धार्मिक प्रवृत्तिप्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ, राजनैतिक प्रवृत्तिप्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ, कलाकार के जीवन की आत्मकथाएँ ।

*** पुश्तैनी :**

–जो पुरानी पीढ़ी के लोगों के अधिकार में रहे हो, जो कई पीढ़ियों से बराबर चला आ रहा हो ।

*** इतर ब्रह्मांड :**

इतर ब्रह्मांड से संबंधित कलाम जी के विचार

अ.ति. : आपने अकेलापन महसूस किया होगा?

ए.पी.जे. : हाँ। सचमुच अकेलेपन का गहरा एहसास हुआ। मानसिक व्यथा के समय मनुष्य अकेला हो जाता है, परंतु जब समय के साथ-साथ समस्याएँ सुलझीं और मैंने अपने अस्तित्व की ब्रह्मांड से अभिन्नता को महसूस करना शुरू किया तो मुझे बोध हुआ कि मैं अपने अहं की अपेक्षा अपने मूल तत्त्व के ज्यादा करीब हूँ।

अ.ति. : यह तो एक लेन-देनवाली बात हुई। आंतरिक यात्रा प्राय: अस्तित्वपरक विषयों को हमारे सामने लाती है, जो प्राय: पीड़ाकारी अनुभव होता है, तथापि मूल तत्त्व का अनुभव और बोध हमें बड़ी सुकून भरी गहराई में ले जाता है।

ए.पी.जे. : मैं इस अवस्था को यूँ कहूँगा कि जब जीवात्मा मन से इतर हो जाती है।

अ.ति. : 'मन से इतर होना' बहुत सुंदर अभिव्यक्ति है। इस अनुभव को थोड़ा विस्तार से समझाइए।

हमारे पथ-प्रदर्शक

ए.पी.जे. : भय को तत्काल विचार और कार्य में बदलने की प्रवृत्ति इनसान को एक सुरक्षात्मक बंधन का भुलावा देकर वस्तुतः एक जाल की ओर ले जाती है। मन ज्यादातर हमारी मानवता के उलट चाल ही चलता है। मन हमें अपरिचित और अनजान वस्तु, व्यक्ति अथवा कार्य से दूर भागने की, बचने की सलाह देता है। मन किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना कार्य के बारे में 'वह क्या है' और उसे 'क्या होना चाहिए' के मध्य भेद करके ऐसा करता है। यह बेसुरापन मन को अनावश्यक सक्रियता और सतत रूप से समस्याग्रस्त चैतन्य की अवस्था में कैद कर देता है।

अ.ति. : इस बोध के प्रकाश में मैं अपनी भी कुछ प्रतिक्रियाओं को बेहतर समझ पा रहा हूँ।

ए.पी.जे. : मन की इस अवस्था में समस्या के जो हल दिखाई पड़ते हैं, वे बार-बार लौटते विचारों और कार्यों के अनवरत दुश्चक्र की ओर ले जाते हैं। ये कार्य शरीर को क्षणिक सुख तो दे सकते हैं, परंतु मन को आनेवाले समय में बचाव के अन्य स्थानों के लिए भटकने हेतु छोड़ देते हैं। इससे कभी कोई वास्तविक हल नहीं निकलता, बल्कि अनावश्यक सक्रियता बढ़ जाती है, जिससे मूल्यवान् जीव-शक्ति का अनर्थक ह्रास होता रहता है।

अ.ति. : सचमुच, उद्देश्यहीन कार्य-कलाप अंत में निराशा की अनुभूति की ओर ही ले जाते हैं, जिससे और अधिक अर्थहीन विचार और कार्यों का एक दुश्चक्र शुरू हो जाता है।

ए.पी.जे. : मन से इतर होने की अवस्था में जब आप विचार और कार्य के माध्यम से मन की बचाव की युक्तियों को नजरअंदाज करते हुए सभी अनुभवों का निरीक्षण करते हैं तो शांत और स्थिर चेतना में आत्मा को दिशा-निर्देश देनेवाले ईश्वरीय संदेश प्रकट होते हैं।

अ.ति. : आप इन संदेशों के बारे में थोड़ा विस्तार से समझाएँगे? किस प्रकार के संदेश की बात कर रहे हैं?

1.2

ए.पी.जे. : ये संदेश कंप्यूटर में कोडबद्ध किए गए ऐसे प्रोग्राम की तरह कार्य करते हैं, जिनका कोड खुलने पर वे निहित अंतर्वस्तु के अनुसार प्रकट होते हैं।

अ.ति. : ये कहाँ से निकलते हैं?

ए.पी.जे. : ये हमारे अनुभव के क्षेत्र में उसके गूढ़तम और मूलभूत सत्य, आनुवंशिक परंपरा को प्रकट करते हैं।

अ.ति. : मेरे मन में इस समय दो जिज्ञासाएँ उठ रही हैं—पहली, मूल तत्त्व की प्रकृति क्या है और इसके क्या लक्षण हैं और दूसरी, हम इस वास्तविक सृष्टि का अनुभव किस प्रकार करते हैं?

ए.पी.जे. : यहाँ तुम एक मौलिक भूल कर रहे हो। मूल तत्त्व को प्रकृति के एक लक्षण का स्वरूप होने की बात ही कहाँ उठती है। उसका निर्धारण करना अथवा उसके लक्षणों को परिभाषित करना सर्वथा असंभव है। मूल तत्त्व न कोई स्पष्ट लक्षण है और न ही वह पहचानने की चीज है।

अ.ति. : विकासमूलक मनोविज्ञान की एक प्रमुख अंतर्दृष्टि है कि 'मैं (मनुष्य) स्वयं में एक स्वायत्त अस्तित्व हूँ', यह भाव वस्तुतः अहंजन्य सीमाओं अथवा बंधनों पर टिका हुआ है; इस बिंदु पर जीवात्मा को पीड़ादायक और अंतरंग व्यक्तिगत अनुभव में इस तथ्य का बोध होने लगता है। अहं (आत्मवाद) हमें 'हाँ-नहीं, इच्छा-आशा' के भँवर में डुबो ले जाता है।

ए.पी.जे. : स्वायत्त अस्तित्व की धारणा पर थोड़ा विस्तार से बताओ।

अ.ति. : जी, यह शब्द मूल रूप से दार्शनिक रूसो (Rousseau)[103] का है। स्वायत्त अस्तित्व का शाब्दिक अर्थ है—अपनी स्वयं की पहचान और मूल्य का चुनाव। स्वायत्त अस्तित्व चुनने का अर्थ है—अच्छी अवधारणा अथवा जीवन-मार्ग का चुनाव करना, जो विशुद्ध व्यावहारिक तर्कों के सार्वभौमिक सिद्धांतों के समान होता है और इस प्रकार उन नियमों के आधार पर अपनी दिशा निर्धारित करना, जो तात्त्विक रूप

से यथार्थ आत्मा में अंतर्निहित सिद्धांतों से प्राप्त किए जाते हैं, न कि शासन, धर्म, प्रवृत्ति अथवा लालच के आधार पर।

ए.पी.जे. : मेरा मानना है कि 'सद्भाव' अथवा 'पवित्रता' यथार्थ प्रकृति के मूलभूत लक्षण है। यह एक ऐसी संभाव्यता है, जो किसी भी समय और किसी भी स्थान पर प्रकट हो सकती है। यह दोषरहित, शाश्वत, अविनाशी तथा अलौकिक सद्भाव है। इसका व्यक्तिगत स्तर पर वितरण नहीं होता। यह पूर्ण रूप से बंधनरहित, असीमित और अनंत है। मुझे तुम्हारे बेटों—असीम और अमोल—के नाम अच्छे लगते हैं, जो इस बंधनहीनता का प्रतीक प्रस्तुत करते हैं।

अ.ति. : तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति मूल रूप से सद्‌गुणी ही होता है?

ए.पी.जे. : इसका उत्तर मैं 'हाँ' में देता हूँ। यह सृष्टि आध्यात्मिक सिद्धांतों का उसी प्रकार पालन करती है, जिस प्रकार भौतिक शास्त्र और गुरुत्व के नियमों का। इन सिद्धांतों को समझना, जानना और फिर उसके अनुसार जीवन-मार्ग का चुनाव करना हमारा कर्तव्य है।

अ.ति. : इस विचार-चिंतन से कितनी सद्-अनुभूति होती है!

ए.पी.जे. : संसार में सद्भाव विद्यमान है, लेकिन किन्हीं विशिष्ट और भौतिक रूपों[104] में नहीं और न ही आपके ध्यान को आकर्षित करनेवाली होड़ में, बल्कि सृष्टि की गहराई में, उसकी नैसर्गिकता में विद्यमान है। यह किसी तात्कालिक विचार अथवा सनक से निरूपित नहीं होता। इसका निर्धारण भी हमारे द्वारा नहीं होता। सद्‌गुण निष्पक्ष रूप से दुनिया में सबके पास उपस्थित होता है। जो मेरे लिए ईमानदारी से अच्छा है, वह दुनिया में और सभी के लिए भी अच्छा ही होता है। या कहा जाए कि सद्‌गुण-स्वभाव का बड़ा कड़ा कानून है, वह किसी इनसानी या सामाजिक/कानूनी व्यवस्था की व्याख्या और विवेचना का मोहताज नहीं है।

अ.ति. : कोई व्यक्ति इसका पालन किस प्रकार कर सकता है?

हमारे पथ-प्रदर्शक

143 4

ए.पी.जे. : जीवात्मा इसका अनुभव आसानी से उस समय कर सकती है, जब वह अपनी अप्रकटता त्यागकर इस प्रत्यक्ष ज्ञान में अभिभूत हो जाती है। एक पृथक् आत्मा के भ्रम और उसकी स्वेच्छा का त्याग कर देने पर जीवात्मा इस सद्‌गुण को प्राप्त कर लेती है। यदि जीवात्मा स्वयं का वास्तविक रूप से समर्पण कर देती है—किसी व्यक्ति के हाथों में नहीं और न ही किसी एक रूप से दूसरे रूप में, बल्कि पूर्ण रूप से ईश्वर की इच्छाओं, इंशा अल्लाह में, तो वह अपरिहार्य रूप से इस सद्भाव को प्राप्त कर लेगी।

अ.ति. : आपने 'क़ल्ब' की मनोवैज्ञानिक अथवा संवेगी मर्म-स्थल के रूप में चर्चा की थी। क्या यही वह मन:स्थल है, जहाँ सद्भाव का वास रहता है?

ए.पी.जे. : यहाँ मैं एक रूपक का प्रयोग करना चाहूँगा। मनुष्य को स्वयं को और अन्य वस्तुओं को देखने के लिए घर में दर्पण और टेलीविजन की आवश्यकता होती है। इसी तरह मनुष्य के शरीर में संवेगी मर्म-स्थल एक विशिष्ट दर्पण की भाँति उसे सभी वस्तुओं की प्रकृति और उसके उपयोग का निर्धारण करने में सहायता करता है। जिस प्रकार दर्पण सुंदर और बदसूरत अक्स में भेद नहीं करता, उसी प्रकार क़ल्ब सभी जगहों पर और सभी मनुष्यों के गुण भर देखता है। यह सभी को अच्छा ही मानता है और इसके अतिरिक्त कुछ देखने का निषेध करते हुए यह उस लक्षण को स्वयं में और साथ-ही-साथ अन्य वस्तुओं में प्रकट करता है। क़ल्ब में किसी प्रकार के दोष के लिए स्थान नहीं है।

अ.ति. : तो हम कष्ट क्यों भोगते हैं?

ए.पी.जे. : जब क़ल्ब में उपस्थित अलौकिक प्रकाश धुँधला हो जाता है तो उसके मौलिक प्रभाव भी अस्पष्ट हो जाते हैं; बल्कि अवरुद्ध और विकृत तक हो जाते हैं। उस अवस्था में मानवीय अनुभव को प्रकट करनेवाली कई संवेदनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इनसे हमारे हृदय में निराशा, असफलता, क्रोध, घृणा, दु:ख, पीड़ा, भय, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार और अन्य कई पीड़ादायक मनोभाव उत्पन्न हो जाते हैं।

हमारे पथ-प्रदर्शक

6} संदर्भ सूची :

* अब्दुल कलाम जी के जीवन से संबंधित विचारों को google में ढूँढ सकते हैं ।
* wiki pedia में भी अधिक जानकारी पा सकते हैं ।
* 'हमारे पथ प्रदर्शक' लेखक : अब्दुल कलाम, अरुण तिवारी, पुस्तक से इतर ब्रह्मांड का परिचय प्राप्त कर सकते हैं ।

> जो व्यक्ति अपनी सोच नहीं बदल सकता,
> वह कुछ भी नहीं बदल सकता ।
>
> – जार्ज बर्नाडशॉ

भीम और राक्षस (एकांकी)

पाठांश : इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1) एकांकी का परिचय कराना
2) विष्णु प्रभाकरजी का परिचय कराना
3) महाभारत के पौराणिक प्रसंगों का पुनरमनन
4) सत्य की जीत एवं असत्य की हार को समझाना
5) संकट आनेपर हिम्मत नहीं हारना इस बात को अवगत कराना
6) राजनीति का प्रभाव समाज पर समाज पर कैसे पड़ता है समझाना

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* एकांकी और नाटक के स्वरूप से संबंधित विचारों को समझाना ।
* विष्णुप्रभाकर जी का परिचय पाठांश द्वारा कराना ।
* महाभारत के प्रमुख पात्र पांडव एवं कौरवों का परिचय कराना ।
* धर्मवान पुरुष धैर्यवान होता है । जो धर्म को धरता है धर्म उसकी रक्षा करता है । इसे एकांकी से समझाना ।
* राजा की जिम्मेदारियों को अवगत कराना । एकचक्रनगर की प्रजाओं को भीम की सहायता का प्रसंग समझाकर परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म है इसे समझाना ।
* बुरे कामों का फल बुरा होता है इस आशय को बकासुर के पात्र द्वारा अवगत कराना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- धर्म परायणता
- सत्य
- सहानुभूति
- सामाजिकता
- परोपकार
- कर्तव्य निष्ठा

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) अभिनय प्रणाली : एकांकी के पात्रों को विद्यार्थियों में बाँटकर अभिनय के साथ व्यक्त करने कहना। अभिनय में भावाभिव्यक्ति की ओर विशेष ध्यान देना । छात्रों द्वारा अभिनय के साथ पाठांश को व्यक्त कराना और समझाना ।

2) चर्चा प्रणाली : पाठ के दृश्यों को छात्रों में बाँट देना चाहिए । वे समूह में चर्चा करेंगे और उसमें निहित अंशों का ग्रहण करेंगे और बताएँगे ।

3) वीडियो दर्शाएँगे । वीडियो देखकर पाठांश को देखने का प्रयास करेंगे ।

4) चित्र प्रणाली : चित्रों द्वारा दृश्यों को समझने का प्रयास कराना ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : चित्र प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- अभिनय करने में रुचि
- उच्चारण
- अभिनय शैली
- भाषा प्रवाह
- स्वाभाविकता और प्रस्तुतीकरण

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) बकासुर क्या काम करता था और उसके बदले में वह क्या लेता था ?

2) 'तो यहाँ आदमी बिकते भी हैं?' इस वाक्य को किसने किससे कहा ?

3) ब्राह्मण के घर में सब लोग क्यों रो रहे थे ?

4) भीम से संबंधित किसी दूसरी घटना बताइए ।

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

* **एकांकी** : एकांकी साधारतः नाटक के उस स्वरूप का नाम है । जिसमें एक ही अंक में संपूर्ण कथानक समाप्त हो जाता है, इस संदर्भ में डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान का कथन है – "एकांकी एक अंक का ही नाटक होता है जिसमें एकांकीकार एक ही नाटकीय लाघव से, जिसमें औत्सुक्य, संभ्रम,(Suspence) और विस्मय (Surprise) का सृजन कर उसे चरमसीमा तक विकसित करता है और नाटकीय विस्मय(Dramatic Surprise) के साथ उसका इस रूप में अंत करता है ।"

एकांकी और नाटक के मौलिक अंतर इस प्रकार देख सकते हैं ।

- एकांकी में एक अंक होता है अनेकांकी (नाटक) में अनेक अंक होते हैं ।
- एकांकी में केवल एक ही कथा या घटना का चित्रण होता है । अनेकांकी में एक अधिकारिक कथा और एक या अनेक प्रासंगिक कथाएँ भी होती हैं ।
- एकांकी में सीमित क्षेत्र में ही पात्रों के चारित्रिक तथा मानसिक घात-प्रतिघात, कथा प्रसंग तथा पात्रों की मूल चारित्रिक विशेषताओं द्वारा कथा का मर्म स्पष्ट हो जाता है ।
- एकांकी में नाटक की भाँति धीरे-धीरे कथा का आरंभ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा आदि के विकास की गुंजाइश नहीं होती । एकांकी में तो कथा आरंभ में ही एक आवेग के साथ आरंभ होती है और जिज्ञासा तथा विस्मय की आरोह-अवरोह गति के साथ चरम सीमा की ओर बढ़ती है ।
- एकांकी की कथा में एक घनत्व होता है और नाटक की कथा में फैलाव ।
- एकांकी कम-से-कम दस मिनट और अधिक-से-अधिक एक घंटे का हो सकता है। नाटक की कथा कई घंटों में समाप्त होती है ।

*** मुहावरे** : लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वह रूढ़ वाक्य या प्रयोग जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो; शब्दों का वह क्रम या समूह जिसमें सब शब्दों का अर्थ एक साथ मिलाकर किया जाता है । मुहावरा शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है-अभ्यास। मुहावरा अति संक्षिप्त रूप में होते हुए भी बड़े भाव या विचार को प्रकट करता है।

मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता इसीलिए इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता । मुहावरे का प्रयोग करना और ठीक-ठीक अर्थ समझना बड़ा कठिन है यह अभ्यास से ही सीखा जा सकता है ।

6} **संदर्भ सूची :**

* महाभारत से जुडे विभिन्न प्रसंगों को you tube में देख सकते हैं ।

* महाभारत की घटनाओं के लिए google में ढूँढ सकते हैं ।

गुरु की डाँट, डपट पिता के प्यार से अच्छी है ।
–सादी

बाहुबली (यात्रा वर्णन)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- दर्शनीय स्थान का परिचय कराना ।
- वहाँ की विशेषताओं को समझाना ।
- स्थान से जुडी – ऐतिहासिक , पौराणिक , सामाजिक कहानी / कहानियों को सुनाना।
- स्थान की रीति-रिवाज, रहन-सहन, प्रथा से संबंधित जानकारी देना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

- अपने स्थानीय विशेषताओं को पहचानने के लिए प्रेरणा देना।
- देखे हुए किसी स्थान के विचारों को कहने के लिए अवसर प्रदान करना।
- देखे हुए किसी स्थान से संबंधित कहानी सुनाने के लिए अवसर प्रदान करना।
- यात्रा करते समय किन बातों पर ध्यान देना है – जानकारी देना।
- स्थान का परिचय प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली तैयार कराना।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- अहंकार का त्याग
- वैज्ञानिक मनोभाव
- दर्शनीय स्थान से संबंधित कहानियों को परखना और अपनाना
- जिज्ञासु बनना
- सावधानी बरतना

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

- ➢ उस स्थान को देखे हुए छात्र/छात्रों को दर्शनीय स्थान से संबंधित विचारों को व्यक्त करने के लिए मौका देना।
- ➢ पाठ के अनुच्छेदों को छात्रों की टोलियों मे बाँटकर प्रत्येक टोली से उन अनुच्छेदों मे निहित अंशों को व्यक्त करने के लिए अवसर देना।
- ➢ दर्शनीय स्थान से संबंधित तसवीरों को दिखाकर विवरण देना।
- ➢ विडियो दिखाकर उस स्थान का परिचय कराना।
- ➢ चित्र लिखकर / लिखाकर स्थान का वर्णन करना।
- ➢ यात्रा में उस स्थान का परिचय करा सकते हैं।

4} **मूल्यांकन :** अ) रचनात्मक मूल्यांकन के लिए इन आधार बिंदुओं को रख सकते हैं-

- अभिरुचि (जानने की इच्छा)
- भाव
- विषयों का संग्रह
- शैली
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन के लिए उस पाठ के अंशों के आधार पर मौखिक / लिखित प्रश्न पूछ सकते हैं।

- ❖ चावुंडराय कौन था?
- ❖ श्रवणबेलगोल कहाँ है?
- ❖ महामस्तकाभिषेक का वर्णन कीजिए। आदि

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

यात्रा वर्णन :

हिन्दी साहित्य में अन्य गद्य विधाओं की भाँति ही भारतेंदु युग से यात्रा साहित्य का आरंभ माना जा सकता है । यात्रा साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है ।

कोई भी लेखक अच्छा लेखक तभी बनता है जब वह जीवन को समीप से देखता है और जीवन को समीप से देखने का सबसे सरल माध्यम यात्रा करना है । रचनात्मक लेखन करनेवाला हर लेखक अपने साहित्य में किसी न किसी रूप में यात्रा साहित्य का सृजन अवश्य करता है । हिन्दी में यात्रा विषयक साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है ।

6} **संदर्भ सूची :**

- you tube, google , wikipedia द्वारा अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- श्रवणबेलगोल और बाहुबली से संबंधित विषयों को पुस्तकालय की पुस्तकों से और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- महामस्तकाभिषेक का वर्णन, श्रवणबेलगोल से संबंधित अधिक जानकारी
- पाठ के आधार पर महामस्तकाभिषेक का वर्णन कर सकते हैं।
- you tube द्वारा महामस्तकाभिषेक से संबंधित वीडियो क्लिपिंग दिखा सकते हैं।
- google wikipedia में श्रवणबेलगोल से संबंधित अधिक जानकारी मिलेगी

बस की यात्रा (व्यंग्य रचना)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1. व्यंग्य के बारे में सामान्य जानकारी देना ।
2. नए बस और पुराने बस की जानकारी देना ।
3. मध्य प्रदेश के सतना, पन्ना और जबलपुर जैसे प्रदेश की जानकारी देना ।
4. मध्य प्रदेश के नक्षे की जानकारी देना ।
5. हरिशंकर परसाई जी का परिचय देना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1) शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :

- मध्य प्रदेश राज्य के बारे में बालक कुछ जानकारी रखता है, उसे उजागर करना ।
- गद्य की विधा– व्यंग्य के बारे में मूलभूल जानकारी देना एवं व्यंग्य रचना के अंतर्गत आनेवाले नियमों का पालन करना ।
- बालक पुराने बस की यात्रा के अपने अनुभव को व्यक्त करने को अवसर प्रदान करना।

2) संकल्पना में निहित जीवन मूल्य :

- सहानुभूति
- प्रशंसा
- सहकार
- साहस
- स्वावलंबन

3) संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :

1.बस की यात्रा :– छात्रों को एक पुराने बस में यात्रा करा सकते हैं ।

2. चर्चा प्रणाली :– नये बस और पुराने बस की लाभ–हानियों पर चर्चा करा सकते हैं ।

3. विडियो देखकर सारांश बताना ।

4. चित्र प्रणाली : पुराने बस का चित्र देखकर आलोचना कर सकते हैं ।

5. मध्य प्रदेश के नक्षे में सतना, पन्ना, जबलपुर जैसे स्थानों को पहचानने को प्रेरित कर सकते हैं ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन में चर्चा प्रणाली द्वारा निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- चर्चा में भाग लेने में रुचि
- उच्चारण
- भाव
- विषय प्रवाह
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1. आपको पुराने बस की यात्रा का अनुभव हुआ क्या और कैसे? (मौखिक)
2. बस की यात्रा एक व्यंग्य रचना है क्या आप मानते है, तो क्यों?
3. बस की यात्रा अच्छी लगती है या रेल की? क्यों?
4. कौन से बस से यात्रा करनी चाहिए?

5} **संकल्पना से संबंधित (अध्यापक द्वारा) पूछे जानेवाले विचार :**

व्यंग्य:

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जिसमें उपहास, मज़ाक (लुत्फ़) और इसी क्रम में आलोचना का प्रभाव रहता है । यूरोप में डिवाइन कॉमेडी, दांते की लैटिन में लिखी किताब को मध्यकालीन व्यंग्य का महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है , जिसमें तत्कालीन व्यवस्था का मज़ाक उड़ाया गया था ।व्यंग को मुहावरे मे व्यंग्यबाण कहा गया है। हिन्दी में हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल इस विधा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । हास्य और व्यंग्य जीवन नौका के दो पतवार हैं। इनके बिना न केवल जीवन अधूरा है बल्कि नीरस भी है। जीने की कला के ये सबसे बेहतर रास्ते हैं , हमारे थके हारे मन को ताजग़ी देते हैं , जीवन की विडम्बनाओं पर खुल कर हंसने का अवसर देते हैं और जटिल परिस्थियों से जूझने का मनोबल भी।

व्यंग्य की परिभाषा क्या है?

व्यंग्य भी ताना के रूप में संदर्भित किया जा सकता। यह एकसाहित्यिक डिवाइस कि विडंबना है, जो वास्तव में क्या मतलब था है से अलग कुछ कह रहा है की भावना पैदा करने के लिए उपयोग किया जाता है ।

- किसी को चिढ़ाने, दुखी करने, नीचा दिखाने आदि के लिए कही जाने वाली वह बात जो स्पष्ट शब्दों में न होने पर भी अथवा विपरीत रूप की होने पर भी उक्त प्रकार का अभिप्राय या आशय प्रकट करती हो

उदाहरण: नेता जी विपक्षी का व्यंग्य सुनकर क्रोधित हो गए ।

- शब्द की व्यंजना वृत्ति से प्रकट होने वाला अर्थ

उदाहरण: व्यंग्यार्थ सहजता से समझ में नहीं आता है ।

व्यंग्य का उद्देश्य : व्यंग्य का जन्म अपने समय की विद्रूपताओं के भीतर से उपजे असंतोष से होता है। विद्वानों में इस बात पर मतभेद लगातार बना रहा है कि व्यंग्य को एक अलग विधा माना जाए या कि वह किसी भी विधा के भीतर 'स्पिरिट' के रूप में मौजूद रहता है। दरअसल व्यंग्य एक माध्यम है जिसके द्वारा व्यंग्यकार जीवन की विसंगतियों , खोखलेपन और पाखंड को दुनिया के सामने उजागर करता है। जिनसे हम सब परिचित तो होते हैं किंतु उन स्थितियों को दूर करने, बदलने की कोशिश नहीं करते बल्कि बहुधा उन्हीं विद्रूपताओं-विसंगतियों के बीच जीने की , उनसे समझौता करने की आदत बना लेते हैं। व्यंग्यकार अपनी रचनाओं में ऐसे पात्रों और स्थितियों की योजना करता है जो इन अवांछित स्थितियों के प्रति पाठकों को सचेत करते हैं। जैसा कि 'व्यंग्य' नाम से ही स्पष्ट है, इस विधा में सामाजिक विसंगतियों का चित्रण सीधे-सीधे (अभिधा में) न होकर परेक्षतः (व्यंजना के माध्यम से) होता है। इसीलिए व्यंग्य में मारक क्षमता अधिक होती है।

परसाई की रचनाएं 'आजाद भारत का सृजनात्मक इतिहास' कही जा सकती हैं। इन रचनाओं का वर्तमान भारत की यथार्थ स्थितियों के संदर्भ में ही आकलन किया जा सकता है। सामान्य सामाजिक स्थितियों को परसाई ने वैचारिक चिन्तन से पुष्ट

करके प्रस्तुत किया है। स्वतंत्र भारत के सकारात्मक-नकारात्मक सभी पहलुओं की परसाई ने बखूबी पड़ताल की है। परसाई की रचनाओं में उस पीड़ित भारत की छटपटाहट को महसूस किया जा सकता है जो शोषकों के तिलिस्म में कैद है। शोषक इस तिलिस्म को बनाए रखने के लिए तरह-तरह के छद्म करते हैं। इन छद्मों का खुलासा परसाई करते हैं। अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता और सतर्क वैज्ञानिक दृष्टि के कारण परसाई छद्म के उन सभी रूपों को आसानी से पहचान लेते हैं जिन तक सामान्यतः रूढ़िवादी दृष्टि नहीं पहुँच पाती। परसाई का रचना संसार बहुत व्यापक है। निजी अनुभूतियों की निर्वैयक्तिक अभिव्यक्ति उनके व्यंग्य लेखन की विशिष्टता है। परसाई की सृजनशील दृष्टि निम्नवर्गीय सामान्य आदमी से प्रारम्भ होकर बहुराष्ट्रीय समस्याओं तक को अपने भीतर समेटती है। परसाई व्यंग्य के माध्यम से सृजन और संहार दोनों एक साथ करते हैं। परसाई का व्यंग्य जब शोषक वर्ग के प्रति होता है तो वह उस वर्ग के प्रति घृणा और आक्रोश उत्पन्न करता है लेकिन जब वही व्यंग्य अभावग्रस्त व्यक्ति पर होता है तो करुणा पैदा करता है।

परसाई के व्यंग्य लेखन की भाषा सप्रयास नहीं है। उनका मानना है कि समाज में रहने के कारण वह हमें अनुभव देता है और विषयानुरूप नई भाषा सिखाता है। यही कारण है कि परसाई की भाषा उनके कथ्य का अनुसरण करती हैं।

शरद जोशी भी परसाई की ही तरह एक अलग भाषाई तेवर के साथ व्यंग्य लेखन करते हैं। शिल्प की सजगता इनके व्यंग्य लेखन की विशेषता है। भाषा में वक्रता के द्वारा ये शब्दों और विशेषणों का विशिष्ट संयोजन करते हैं।

श्रीलाल शुक्ल का नाम भी स्वातंत्रयोत्तर व्यंग्य लेखन में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। इनके उपन्यास ‘रागदरबारी’ ने मोहभंग की स्थितियों के यथार्थ को सजीव रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। रवींद्रनाथ त्यागीका लेखन आत्म-व्यंग्य के कारण महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके लेखन को हम हास्य और व्यंग्य का संयोजन कह सकते हैं। यह न सिर्फ पाठक को प्रफुल्लित करता है बल्कि उसे सोचने के लिए बाध्य भी करता है।

लतीफ घोंघी के व्यंग्य में राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को विषय बनाया गया है। इनके व्यंग्य में मारकता का अभाव है , किंतु इनका कथ्य बहुत व्यापक है। नारी-शोषण, कालाबाज़ारी, भुखमरी, शैक्षिक-साहित्यिक दुनिया की गड़बड़ियाँ आदि विषयों के साथ-साथ इन्होंने आम आदमी की दैनिक परेशानियों को अपने व्यंग्यों में स्थान दिया है। भाषा में उर्दू का पुट है।

5} **संदर्भ सूची :**

1) हरिशंकर परसाई और मध्य प्रदेश के सतना, पन्ना और जबलपुर से संबंधित अधिक जानकारी google में पा सकते हैं ।

2) “bus ki yatra by harishankar parasai” you tube में देख सकते हैं ।

3) मध्य प्रदेश राज्य का नक्षा

4) मध्य प्रदेश राज्य से संबंधित स्कूल ग्रंथालय की किताबें ।

5) शब्दकोश

अध्ययन आनंद का, अलंकरण का और योग्यता का काम करता है ।

– बेकन

रवींद्रनाथ ठाकुर (जीवनी)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- रवींद्रनाथ ठाकुर जी के व्यक्तित्व को समझाना ।
- साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र के लिए उनकी अनुपम देन ।
- विश्वभारती विश्वविद्यालय का परिचय ।
- ठाकुरजी को प्राप्त पुरस्कारों की जानकारी देना ।
- उस समय की भारतीय संस्कृति का परिचय कराना ।
- साहित्यकारों के प्रति रुचि पैदा करना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* पाठांश द्वारा रवींद्रजी के बचपन, शिक्षा–दीक्षा, साहित्य सेवा से संबंधित विचारों को अवगत कराना ।
* साहित्य के लिए उनकी अनुपम देन व शिक्षा क्षेत्र के लिए विश्वभारती विश्वविद्यालय द्वारा दिये गये योगदान के बारे में बताना ।
* विश्वभारती विश्वविद्यालय से संबंधित विचार पाठांश द्वारा समझाकर अधिक जानकारी पाने केलिए प्रेरित करना ।
* रवींद्र जी को उनकी साहित्य सेवा के लिए प्राप्त नोबल पुरस्कार, सर की उपाधि और डी,लिट. की उपाधियों के बारे में विस्तृत जानकारी देना ।
* रवींद्र जी के समय की भारत की राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का परिचय देना ।
* साहित्य से होनेवाले लाभों को समझाकर साहित्यकारों के प्रति ध्यान आकृष्ट करना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- ➢ नेतृत्व
- ➢ सांस्कृतिक मूल्य को मानना
- ➢ सेवा भाव – समाज सेवा
- ➢ व्यक्ति गौरव
- ➢ आदर्श
- ➢ आत्मगौरव

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) भाषण : छात्र 'रवींद्रनाथ ठाकुर की जीवनी' से संबंधित विचारों को पाठांश व अलग पुस्तकों से संग्रह कर सीखते हैं और भाषण के रूप में व्यक्त करते हैं ।

2) पुस्तक पठन प्रणाली : छात्र पाठांश को स्वयं पढ़कर अर्थ समझने का प्रयास करते हैं और हर एक छात्र पढ़कर विचारों को अपनी भाषा में प्रस्तुत करता है ।

3) प्रश्नोत्तर प्रणाली : अध्यापक पाठ के क्रमानुसार प्रश्न पूछते हैं, छात्र उत्तर देते–देते पाठांश को समझेंगे ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : भाषण के मूल्यांकन में निम्नांकित आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- सारांश
- निरंतरता
- आत्मविश्वास
- अभिव्यक्ति शैली
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) रवींद्रनाथ जी को कौन–कौन से पुरस्कार मिले हैं ?

2) रवींद्र जी ने किन विषयों पर मौलिक लेख लिखे हैं ?

3) रवींद्र जी को गुरुदेव किसने संबोधित किया ?

4) विश्वभारती नाम से प्रसिद्ध विश्वविद्यालय कहाँ है ?

5) शांतिनिकेतन का आशय क्या था ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

*** जीवनी :** हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में विकसित साहित्यिक विधाओं में जीवनी का महत्वपूर्ण स्थान है । पाश्चात्य विद्वान लिटन स्ट्रैची के मत में जीवनी "लेखन कला का सबसे सुकोमल और सहानुभूतिपूर्ण स्वरूप है ।" यह साहित्य की आधुनिकतम विधा स्वीकार की गई है । "जीवनीकार का लक्ष्य जीवन की उन घटनाओं और क्रिया–कलापों का रंजक वर्णन करना होता है, जो व्यक्ति–विशेष की बड़ी–से–बड़ी महानता से लेकर छोटी–से–छोटी घरेलू बातों तक संबंधित होती है ।" डॉ. शिप्ले के मतानुसार – "जीवनी किसी व्यक्ति–विशेष की जीवनी–घटनाओं का विवरण है ।" जीवन कथा वह साहित्यिक विधा है जिसमें भावुक

कलाकार किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन या उसके जीवन के किसी भाग का वर्णन सुपरिचित ढंग से इस प्रकार व्यक्त करता है कि उस व्यक्ति की सच्ची जीवन–गाथा के साथ–साथ कलाकार का हृदय भी मुखरित उठता है ।

हिन्दी में जो विस्तृत जीवनी साहित्य उपलब्ध होता है उसका वर्गीकरण किया गया है । जैसे : आदर्शात्मक जीवनियाँ, उपदेश प्रधान जीवनियाँ, मनोवैज्ञानिक, कलात्मक, व्यंग्यात्मक, बालोपयोगी आदि ।

* **ब्रह्म समाज :** भारत का एक सामाजिक धार्मिक आंदोलन है, जिसने बंगाल के पुनर्जागरण युग को प्रभावित किया । इसके प्रवर्तक राजा राममोहन राय, अपने समय के विशिष्ट समाज सुधारक थे । 1828 में ब्रह्म समाज को राजा राममोहन और द्वारकानाथ टैगोर ने स्थापित किया था । इसका एक उद्देश्य भिन्न–भिन्न धार्मिक आस्थाओं में बँटी हुई जनता को एक जुट करना तथा समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना है ।

राजा राममोहन राय धार्मिक सत्य को खोजने के उदार मन से सभी महत्वपूर्ण धर्म के शास्त्रों का अध्ययन किया । इस प्रकार से वह संस्कृत भाषा में हिन्दु धर्म शास्त्रों, जैसे कि वेद, अध्ययन करने के साथ, अरबी भाषा में कोरान और हिब्रू भाषा और ग्रीक भाषा में बाइबल पाठ कर इस समाज की स्थापना की ।

* **शांतिनिकेतन और उसके उद्देश्य :**

शांतिनिकेतन

उद्देश्य

(१) विभिन्न दृष्टिकोणों से सत्य के विभिन्न रूपों की प्राप्ति के लिए मानव मस्तिष्क का अध्ययन करना।

- (२) प्राचीन संस्कृति में निहित आधारभूत एकता के अध्ययन एवं शोध द्वारा उनमें परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना।
- (३) एशिया में व्याप्त जीवन के प्रति दृष्टिकोण एवं विचारों के आधार पर पश्चिम के देशों से संपर्क बढ़ाना।
- (४) पूर्व एवं पश्चिम में निकट संपर्क स्थापित कर विश्व शान्ति की संभावनाओं को विचारों के स्वतंत्र आदान-प्रदान द्वारा दृढ़ बनाना।
- (५) इन आदर्शों को ध्यान में रखते हुए शान्ति निकेतन में एक ऐसे सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना करना जहाँ धर्म, साहित्य, इतिहास, विज्ञान एवं हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुस्लिम, सिख, ईसाई और अन्य सभ्यताओं की कला का अध्ययन और उनमें शोधकार्य, पश्चिमी संस्कृति के साथ, आध्यात्मिक विकास के अनुकूल सादगी के वातावरण में किया जाए।

6} **संदर्भ सूची :**

* साहित्यालोचन, लेखक :प्रो. भारत भूषण सरोज, डॉ कृष्णदेव शर्मा ।
* शांतिनिकेतन, ब्रह्म समाज से संबंधित अधिक विचारों को google में ढूँढ सकते हैं ।

विश्वास करना एक गुण है ।
अविश्वास दुर्बलता की जननी है ।
–महात्मा गाँधी

कर्नाटक संपदा (निबंध)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1. निबंध के बारे में सामान्य जानकारी देना ।
2. कर्नाटक राज्य की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्र की जानकारी देना ।
3. कर्नाटक राज्य एवं कन्नड भाषा के प्रति स्वाभिमान जागृत करना ।
4. कर्नाटक के साहित्य, विज्ञान, तंत्रज्ञान, प्रेक्षणीय स्थानों के बारे में जानकारी देना ।

संकल्पनाओं का परिचय :–

1.शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :–

- कर्नाटक राज्य के बारे में बालक कुछ जानकारी रखता है, उसे उजागर करना ।
- गद्य की विधा– निबंध के बारे में सामान्य जानकारी देना एवं निबंध रचना के अंतर्गत आनेवाले नियमों का पालन करना ।
- बालक कर्नाटक के अनेक ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थानों के बारे में जानकारी रखता है, उसे व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना ।
- इस पाठ द्वारा कुछ तांत्रिक एवं औद्योगिक संस्थाओं और कारखानों की जानकारी प्रदान करना ।
- प्राचीन कन्नड साहित्यकारों एवं ज्ञानपीठ पुरस्कारों से पुरस्कृत कन्नड साहित्यकारों के बारेमें थोडी बहुत जानकारी रखता है उसे व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना ।

2. संकल्पना में निहित जीवन मूल्य :–

- सौंदर्यप्रज्ञा
- प्रशंसा
- ऐतिहासिक मूल्य
- विषय रुचि

3. संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :–

1. शैक्षिक यात्रा :– कर्नाटक राज्य एवं बेंगलुरु की शैक्षिक यात्रा द्वारा पाठ परिचय एवं तात्पर्य बालकों को दे सकते हैं।
2. चर्चा प्रणाली : पाठ के अनुच्छेदों को छात्रों में बाँटकर, छात्र समूहों में, आपस में चर्चा करके पाठ में निहित अंशों को अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।
3. विडियो देखकर सारांश बताना ।

4. चित्र प्रणाली : चित्रों द्वारा छात्र निबंध का सारांश जान लेते हैं ।

5. कर्नाटक नक्षे में सभी प्रसिद्ध स्थानों को एवं नदी और जलपातों को पहचानना ।

4} **मूल्यांकन :–** अ) रचनात्मक मूल्यांकन में चर्चा प्रणाली द्वारा निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- चर्चा में भाग लेने में रुचि
- उच्चारण
- भाव
- विषय प्रवाह
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1. क्या आपको कर्नाटक की प्राकृतिक सौंदर्य पसंद है? तो क्यों?
2. ‘कन्नड भाषा एक शास्त्रीय भाषा है’ इस संबंधित आपके विचार स्पष्ट कीजिए।
3. कर्नाटक में कौन–कौन सी नदियाँ, किन–किन प्रदेशों में बहती हैं?
4. कर्नाटक के बारे में आप और क्या क्या जनते हैं? (मौखिक)

5} **संकल्पना से संबंधित (अध्यापक द्वारा) पूछे जानेवाले विचार :**

निबन्ध :

अर्थ तथा परिभाषा :

निबन्ध शब्द का मूल है- 'बन्ध', निबन्ध का अर्थ होता है- 'बाँधना'। किसी विषयवस्तु से सम्बन्धित ज्ञान को क्रमबद्ध रूप से बाँधते हुए लेखन को निबन्ध कहा जाता है। बाबू गुलाबराय ने निबन्ध को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है- "एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय या वर्णन या प्रतिपादित एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव, सजीवता तथा सम्बद्धता के साथ किया जाना ही निबन्ध कहलाता है।"

हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार- "नए युग में जिन नवीन ढंग के निबंधों का प्रचलन हुआ है वे व्यक्ति की स्वाधीन चिन्ता की उपज है। इस प्रकार निबंध में निबंधकार की स्वच्छंदता का विशेष महत्त्व है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है: " निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर-उधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता चलता है। यही उसकी अर्थ सम्बन्धी व्यक्तिगत विशेषता है। अर्थ-संबंध-सूत्रों की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ ही भिन्न-भिन्न लेखकों के दृष्टि-पथ को निर्दिष्ट करती हैं। एक ही बात को लेकर किसी का मन किसी सम्बन्ध-सूत्र पर दौड़ता है, किसी का किसी पर। इसी का नाम है एक ही बात को भिन्न दृष्टियों से देखना। व्यक्तिगत विशेषता का मूल आधार यही है।”

निबन्ध का हिन्दी गद्य साहित्य में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह गद्य लेखन की एक विशेष विधा है। किसी भी विषय पर यदि कुछ लिखना हो या फिर कुछ कहना हो, तब निबन्ध का ही सहारा लिया जाता है। निबन्ध के पर्याय रूप में संदर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है। इसे अंग्रेज़ी भाषा के 'कम्पोज़ीशन' और 'एस्से' के अर्थ में स्वीकार किया जाता है।

निबन्ध के प्रकार :

मुख्यत: निबन्ध के निम्नलिखित चार भेद होते हैं-

१. विचारात्मक निबन्ध
२. वर्णनात्मक निबन्ध
३. विवराणात्मक निबन्ध
४. भावात्मक निबन्ध

१. विचारात्मक निबन्ध

जब निबन्ध में किसी विषयवस्तु का तर्कपूर्ण विवेचन, विश्लेषण तथा खोज की जाए तो उसे 'विचारात्मक निबन्ध' कहा जाता है। विचारात्मक निबन्ध में बुद्धितत्व की प्रधानता होती है और इनमें लेखक के चिन्तन, मनन, अध्ययन, मान्यताओं तथा धारणाओं का प्रभाव स्पष्टतः दिखाई पड़ता है।

२. वर्णनात्मक निबन्ध

जब किसी निबन्ध में किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति, दृश्य आदि का निरीक्षण के आधार पर रोचक तथा आकर्षक वर्णन किया जाए तो उसे 'वर्णनात्मक निबन्ध' कहा जाता है।

३. विवरणात्मक निबन्ध

इस प्रकार के निबन्ध में ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं, स्थानों, दृश्यों आदि का रोचक तथा आकर्षक विवरण दिया जाता है, इसीलिए इसे 'विवरणात्मक निबन्ध' कहा जाता है।

४. भावात्मक निबन्ध

जब किसी निबन्ध में हृदय में उत्पन्न होने वाले भावों तथा रागों को दर्शाया जाए तो उसे भावात्मक निबन्ध कहा जाता है। ऐसे निबन्धों की भाषा सरल, मधुर, ललित तथा संगीतमय होती है और ये निबन्ध कवित्वपूर्ण तथा प्रवाहमय प्रतीत होते हैं।

- निबंध कैसे लिखें?

निबंध लिखने से पहले कुछ अहम बातों का ध्यान रखना जरूरी है। किसी भी विषय पर लिखें लेकिन उसका अध्ययन जरूर कर लें।

आइये जानते हैं कुछ अहम बातें :

1. निबंध लिखने से पूर्व विषय की समझ होना बहुत जरूरी है। विषय को पहले जानें, समझें। उसके बाद विभिन्न बिंदुओं को किसी कागज या डायरी में लिखें। पाइंट्स बनाकर विषय पर बेहतर लिखा जा सकता है।

2. भाषा सरल रखें। ऐसे निबंध पढ़ने में रोचक तथा आसानी से समझ में आ जाते हैं। आपके लिये लिखने में भी आसानी होती है।

3. लिखने के बाद निबंध को पढ़कर देखिये। इससे आप स्वयं जान सकते हैं कि गलतियां कहां हुईं। गलतियों को सुधारने का यह सबसे बेहतर तरीका है। भाषा की लय का भी आपको पता चल जायेगा। आप खुद पढ़ेंगे तो यह भी मालूम चलेगा कि कहीं आप विषय से भटक तो नहीं रहे।

4. विषय को क्रमबद्ध तरीके से लिखिये। आपकी बात इससे आसानी से दूसरों की समझ में आयेगी।

5. निबंध के वाक्य अधिक लंबे न हों।

6. सही प्लानिंग करें

सही प्लानिंग किसी भी निबंध को तेज गति से लिखने में मदद करती है। सर्वप्रथम अपने विचारों एवं तर्कों के विभिन्न बिंदुओं को 'की आइडियाज' के रूप में एक जगह नोट करते जाएं। आगे चल कर इनकी जरूरत पड़ती है। ऐसा माना जाता है कि यदि एक बार सही प्लानिंग हो जाए तो निबंध लिखना कठिन नहीं होता।

7. समय का ख्याल रखें

परीक्षा कक्ष में निबंध लिखने के दौरान समय की कमी रहती है। हर निबंध के लिए निश्चित अंक निर्धारित किए गए होते हैं। उसी समय-सीमा के अनुसार अपने निबंध के विभिन्न खण्डों को प्लानिंग के तहत लिखने की कोशिश करें। इसके अभाव में आप चाह कर भी असरदार बातें नहीं लिख पाएंगे तथा आपके नंबर कम हो जाएंगे।

6} **संदर्भ सूची :**

1) कर्नाटक के वास्तुशिल्प, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक संबंधित जानकारी google में पा सकते हैं ।

2) "history of Karnataka, journey of Karnataka, bengaluru, mysore" you tube में देख सकते हैं ।

3) कर्नाटक राज्य का नक्शा

4) कर्नाटक राज्य से संबंधित स्कूल के ग्रंथालय की किताबें ।

गिल्लू (रेखाचित्र)

पाठांश : इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1) पशु–पक्षियों के प्रति महादेवी वर्मा का प्रेम एवं उनके सरल जीवन के बारे में बताना।

2) रेखाचित्र का परिचय कराना ।

3) स्नेह भाव तथा प्राणि दया ।

4) पशु–पक्षियों का स्वभाव तथा उनकी जीवनशैली समझाना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

- वर्मा का परिचय : आठवीं कक्षा में छात्र वर्माजी के सरल जीवन से संबंधित विचार प्राप्त कर चुके हैं । छात्रों द्वारा ही पुनर्मनन करा सकते हैं ।
- पाठांश द्वारा पशु–पक्षियों के साथ व्यवहार तथा छोटे से छोटे जीव गिल्लू के प्रति अनन्य प्रेम भाव को समझाना ।
- गद्य की विधाओं को समझाते हुए रेखाचित्र और संस्मरण का अंतर स्पष्ट करना ।
- वर्माजी के विचारों से प्रेरित होकर छात्र अपने घरों में पालित प्राणि या पक्षियों के साथ प्रेम जताने एवं विचार बाँटने का अवसर देना ।
- इस पाठ द्वारा पशु–पक्षियों की जीवन शैली समझते हुए खुद के अनुभव द्वारा समझाता है साथ ही भविष्य में उनके प्रति सदा प्रेम भाव रखने का प्रयास करता है ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

* प्रेमभाव
* जीवन शैली
* प्राणि दया
* सहानुभूति
* स्वतंत्रता
* प्राणि पक्षियों के संरक्षण के प्रति जागृति
*उपचार मनोभाव

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) चर्चा प्रणाली : पाठ के अनुच्छेदों को छात्रों में बाँटकर छात्र समूहों में आपस में चर्चा करके पाठ में निहित अंशों को अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।

2) विडियो देखकर सारांश बताना ।

3) चित्र प्रणाली : चित्रों द्वारा छात्र कहानी का सारांश जान लेते हैं ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : चर्चा प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- चर्चा में भाग लेने में रुचि
- उच्चारण
- भाव
- विषय प्रवाह
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) वर्माजी ने गिल्लू का उपचार कैसे किया ?

2) गिल्लू सुराही पर कब लेट जाता था ?

3) गिल्लू की समाधि कहाँ बनायी गयी ?

4) गिल्लू घायल स्थिति में अगर आपको मिलता तो आप क्या करेंगे ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

* **रेखाचित्र :**

"रेखाचित्र, चित्रकला और साहित्य के सुन्दर सुहाग से उद्भूत एक अभिनव कला रूप है।" इस विधा का लेखक साहित्यकार के साथ-साथ चित्रकार भी होता है । "चित्रकार अपनी तूलिका के कलामय स्पर्श से चित्र पटल पर अंकित रेखाओं से कुछ अधिक उभरी हुई रेखाओं को सँवार कर एक सजीव रूप प्रदान कर देता है । रेखाचित्रकार मनः पटल पर बिखरी हुई शत-शत स्मृति रेखाओं में से उभरी हुई रमणीय रेखाओं को अपनी कला की तूलिका से अनुभूति के रंग में रंजित कर जीते-जागते शब्द-चित्र में परिणत कर देता है । यही शब्द-चित्र रेखाचित्र कहलाता है।"

इसमें एक ही वस्तु, घटना या चरित्र-प्रधान होता है, जिससे संबंधित प्रमुख विशेषताओं को उभारा जाता है । रेखाचित्र मूलतः चित्रकला का शब्द है । साहित्य का रेखाचित्र कुछ चुने हुए शब्दों द्वारा अपने प्रतिपाद्य विषय का एक साकार सजीव सा चित्र प्रस्तुत करने में पूर्ण समर्थ रहता है ।

इसमें कहानी, निबंध, गद्य काव्य, संस्मरण आदि की कतिपय विशेषताएँ एक साथ घुली मिली सी मिल जाती है । इस विचित्र मनोरम संगठन के कारण ही रेखाचित्र एक स्वतंत्र विधा मानी जाती है ।

*** काकभुशुण्डि कौन है ?**

इंद्रजीत ने श्रीराम पर नागपाश चलाया । प्रभु नागपाश में बंध गए । श्रीराम नागपाश में इसलिए बंध गए कि उन्होंने नागरज वासुकी को वरदान दिया था कि वह उनके सम्मान की रक्षा करेंगे । श्रीहरि के वाहन गरुड़ ने नागपाश काटकर प्रभु को बंधन मुक्त कराया । । गरुड़ को श्रीराम के भगवान के अवतार होने पर संदेह हो गया । संदेह दूर कर लेने गरुड़ ब्रह्मा के पास गए, ब्रह्मा ने शिव के पास और शिवजी ने रामभक्त काकभुशुण्डि के पास भेजा । काकभुशुण्डि ने गरुड़ का संदेह दूर किया और अपनी कथा सुनाई ।

सतयुग के पूर्व के कल्प में काकभुशुण्डि का पहला जन्म अयोध्या में एक शूद्र के घर में हुआ । वे शिवजी के अनन्य भक्त थे किन्तु अज्ञानवश में शिवजी के अलावा अन्य सभी देवताओं की निन्दा किया करते थे । एक बार अयोध्या में घोर अकाल पड़ा । भुशुण्डि को अयोध्या छोड़कर उज्जैन जाना पड़ा । उज्जैन में वह दयालु ब्राह्मण की सेवा में लगे और उन्हीं के साथ रहने लगे ।

वह ब्राह्मण भी शिव के अनन्य भक्त थे लेकिन वह भुशुण्डि की तरह भगवान विष्णु की निन्दा कभी नहीं करते थे । ब्राह्मण ने भुशुंडी को शिवजी का गूढ़ मंत्र दिया । मंत्र पाकर उसका अभिमान और बढ़ गया । अब तो वह भगवान विष्णु से जैसे द्रोह का ही भाव रखने लगा । भुशुण्डि के इस व्यवहार से उसके गुरु अत्यंत दुःखी थे । वे उसे श्रीराम की भक्ति का उपदेश देकर राह पर लाने की कोशिश करते थे । पर भुशुण्डि सुनने को राजी न हुए ।

एक दिन भुशुण्डि ने भगवान शिव के मंदिर में अपने गुरु का अपमान कर दिया । महादेव भुशुण्डि के इस व्यवहार से बड़े क्रोधित हुए । तभी आकाशवाणी हुई– मूर्ख तुमने गुरु का निरादर किया है । इसलिए तू सर्प जन्म में जाएगा । सर्प जन्म के बाद भी तुझे 1000 बार अनेक जन्मों में जन्म लेना पड़ेगा ।

गुरु बड़े दयालु थे । उन्होंने अपने शिष्य की शाप से मुक्त कराया और शिवजी की स्तुति करने लगे । गुरु द्वारा क्षमा याचना पर आकाशवाणी हुई–मेरा शाप व्यर्थ नहीं जाएगा । इसे 1000 बार जन्म तो लेना ही पड़ेगा किन्तु यह जन्म और मृत्यु की पीड़ा से मुक्त रहेगा और इसे हर जन्म की बातें याद रहेंगी । भुशुंडी ने विन्ध्याचल में सर्प का जन्म प्राप्त किया । कुछ समय बाद भुशुंडी अपने शरीर को बिना किसी कष्ट के त्याग दिया करता था । उसे हर जन्म की बातें

याद रहती थीं । श्रीरामचंद्रजी के प्रति भक्ति भी उसमें जाग गई ।

भुशुण्डि ने अन्तिम शरीर एक ब्राह्मण का पाया और ज्ञानप्राप्ति के लिए लोमश ऋषि के पास गया । लोमश ऋषि जब उसे ज्ञान देते तब वह उनसे कुतर्क करने लगता । नाराज होकर लोमश ऋषि ने उसे चाण्डाल पक्षी(कौआ) होने का शाप दे दिया । शाप देने के बाद ऋषि को पश्चाताप हुआ । उन्होंने कौए कोराममंत्र देकर इच्छा मृत्यु का वरदान दे दिया । भुशुण्डि को कौए का शरीर पाने के बाद उसे वरदान में राममंत्र और इच्छामृत्यु का वरदान मिला इसलिए उसे इस शरीर से प्रेम हो गया । वह कौए के रूप में ही रहकर राम कथा सुनाने लगे तथा काकभुशुण्डि के नाम से विख्यात हुए ।

*** समादरित, सम्मानित :**

पितृ पक्ष में कौए पुरखों के रूप में आकर हमसे कुछ पाने की इच्छा रखते हैं, प्रियजन आने की सूचना देते हैं । पुराणों में काकभुशुण्डि को पक्षियों के गुरु और शनिदेव का वाहन भी माना गया है ।

*** अनादरित, अवमानित :**

कौए का कर्कश ध्वनि से काँव-काँव करना अशुभ माना जाता है । उनका घर के अंदर आना और मनुष्यों को स्पर्श करना अशुभ माना जाता है ।

*** सोनजुही :**

सुगंधित पीले रंग के फूलोंयुक्त ये लताएँ ज्यादातर उत्तर भारत में पायी जाती हैं ।

6} **संदर्भ सूची :**

1) काकभुशुंण्डि, सोनजुही, रेखाचित्र आदि से संबंधित विचारों को google में ढूँढ सकते हैं ।
2) "Gillu of Mahadevi verma" you tube में देख सकते हैं ।
3) महादेवी वर्माजी के बारे में अधिक जानकारी के लिए आठवीं कक्षा के हिन्दी प स्तु में और में देखिए ।
4) शब्द कोश – सोनजूही, काकभुशुण्डि, सुराही जैसे शब्दों को देख सकते हैं ।
5) रेखाचित्र _ साहित्यालोचन, लेखक :प्रो. भारत भूषण सरोज, डॉ कृष्णदेव शर्मा ।

साहित्य सागर का मोती (साक्षात्कार)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- चंद्रशेखर कंबार जी का व्यक्तित्व परिचय कराना ।
- साक्षात्कार शब्द की उत्पत्ति विकास और उसका पूर्व इतिहास का विवरण देना ।
- साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली को तैयार करने के बारे में छात्र में क्षमता उत्पन्न करना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* कंबार जी के जीवन संबंधी अन्य रोचक घटनाओं का विवरण देना ।
* गद्य साहित्य के अन्य विधाओं का परिचय देकर चर्चा के द्वारा साक्षात्कार तथा जीवन चरित्र में अंतर समझाना ।
* छात्रों के बीच संवाद शैली को विकसित करने का अवसर प्रदान करना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- ➢ व्यक्ति गौरव
- ➢ सहनशीलता
- ➢ महानता

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) चर्चा प्रणाली : पाठ के अनुच्छेदों को छात्रों में बाँटकर छात्र समूहों में आपस में चर्चा करके पाठ में निहित अंशों को अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं । प्रमुख साहित्यकारों का साक्षात्कार से संबंधित प्रश्नावली तैयार करवाना ।

2) विडियो देखकर सारांश बताना ।

3) प्रश्नोत्तर के माध्यम से छात्र व्यक्ति परिचय प्राप्त करते हैं ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : गीत प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- प्रश्न क्यों करना चाहिए ?
- प्रश्नार्थक चिह्नों का महत्व समझाना
- संवाद
- संवाद के लिए उपयुक्त भाषा शैली
- समय सीमा

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं । साक्षात्कार जिस व्यक्ति के साथ किया गया है उनसे जीवन से संबंधित प्रश्न करके स्थूल परिचय प्राप्त करना ।

1) कंबारजी ज्ञानपीठ पुरस्कार कब मिला है ?
2) कंबारजी की प्रमुख रचनाएँ कौन-सी है?
3) कंबारजी का साहित्य क्षेत्र कौन-सा है ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

*** साक्षात्कार /इंटरव्यू/भेंटवार्ता:**

हिन्दी गद्य की नव्यतम विधाओं में आज इण्टरव्यू सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है । इसके लिए 'साक्षात्कार', 'भेंटवार्ता', 'अंतरंग वार्ता' तथा 'परिचर्चा' शब्द भी पर्याय रूप में प्रयुक्त होते हैं । 'साक्षात्कार' से अभिप्राय उस रचना से है जिसमें लेखक व्यक्तिविशेष के साथ साक्षात्कार करने के बाद प्रायः किसी निश्चित प्रश्नमाला के आधार पर उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करता है और फिर उसे लिपिबद्ध करके तथा समालाप्य को दिखाकर एवं सही कराकर पाठकों तक पहुँचा देता है ।

अंग्रेजी साहित्य में इस विधा का पर्याप्त विकास हुआ है । हिन्दी में भी यह विधा पाश्चात्य-प्रभावस्वरूप से ही विकसित हुई है । इण्टरव्यू वह रचना है "जिसमें लेखक किसी व्यक्ति विशेष से प्रथम भेंट में अनुभव होनेवाली उसके संबंध में अपनी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को अपनी पूर्व-धारणाओं एवं रुचियों से रंजित कर सरस भावपूर्ण ढंग से व्यंजना-प्रधान शैली में बँधे हुए शब्दों में व्यक्त करता है ।" यह भी संस्मरण का एक रूप है । इण्टरव्यू में केवल किसी एक ही व्यक्ति का चित्रण होता है । इसके लिए आवश्यक है कि लेखक का अभीप्सित व्यक्ति से निजी संपर्क स्थापित हुआ हो, और उससे लंबी-चौड़ी बातचीत भी हुई हो ।

6} **संदर्भ सूची :**

* साहित्यालोचन – प्रे. भारतभूषण सरोज, डॉ. कृष्णदेव शर्मा ।

* हिन्दी साहित्य का इतिहास

पद्य(कविता) शिक्षण

अर्थ एवं परिभाषा :

मनुष्य संवेदशनशील एवं चेतना संपन्न प्राणी है । इसका मन प्रकृति में प्रतिफलित होनेवाले सौम्य, मनोरम एवं विकराल परिवर्तनों से भी भाव ग्रहण करता है । आसपास होनेवाले दुःख–सुख, आशा–निराशा, प्रेम–घृणा, दया–क्रोध से चलायमान रहता है । मनुष्य की इसी प्रवृत्ति की प्रेरणा से ज्ञान एवं आनंद के उस भांडर का सृजन, संचय एवं संवर्धन होता रहा है जिसे साहित्य कहते हैं । उसी साहित्य का एक अंग कविता है । सुख–दुःख की भाववेशमयी अवस्था का स्वर साधना के उपयुक्त पदों में प्रकाशन ही कविता है ।

कविता, काव्य या पद्य, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है । कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक्त रचना या कवि की कृति, जो छंदों की शृंखलाओं में विधिवत बाँधी जाती है । कविता में रस निहित होती है । भावात्मक होती है । कविता लयबद्ध, गेयशैली में होती है ।

कविता शिक्षण के उद्देश्य :

- छात्रों को कविता में रुचि उत्पन्न करना ।
- उनमें गति, लय, भावयुक्त वाचन की योग्यता प्रदान करना ।
- छात्रों की कल्पनाशक्ति का विकास कर उन्हें सृजनशील बनाना ।
- कविता के माध्यम से बच्चों का संसार से रागात्मक संबंध स्थापित करना ।
- उनमें सौंदर्यानुभूति की क्षमता उत्पन्न कर उन्हें रस, छंद, अलंकार का ज्ञान कराना ।
- कविता का रसस्वादन कर उसे अपने शब्दों में व्यक्त करने का कौशल जागृत करना ।
- कविता स्वयं काव्य रचना हेतु प्रोत्साहित करना ।
- हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम जागृत करना ।
- विविध भावों की रचनाओं व उनके समीक्षात्मक अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना ।

कविता शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य :

विद्यार्थियों में किसी विशेष कविता के भाव को समझने की शक्ति उत्पन्न करना है जिसका निर्धारण प्रस्तुत पाठ के शिक्षण बिंदुओं के आधार पर होता है ।

कविता शिक्षण की प्रणालियाँ :

1. **गीत प्रणाली** : संगीत सभी को अच्छा लगता है । निर्झरों में कल–कल की ध्वनि से बहता जल प्रकृति की सुरम्य एवं मनोरम, वारिधियों की गोद, मंद–मंद गति चलनेवाली समीर सभी को सहज आकर्षित करती है ।

इस विधि में गीत का सस्वर वाचन किया जाता है । सब छात्र वाचन में लय, गति–यति के साथ प्रस्तुत करते हैं । यह प्रणाली कक्षाओं के लिए बड़ी आकर्षक एवं उपयोगी है । अतः यह विधि मनोवैज्ञानिक है।

2. **अभिनय प्रणाली :** इस प्रणाली में गीतों के साथ–साथ अभिनय भी किया जाता है । यह बालोचित गीत या तुकबंदी अभिनय प्रधान होती है ।

जैसे : राहुल – 'माँ कह एक कहानी

यशोधरा– समझ लिया कया बेटा तूने मुझको अपनी नानी ।'

इस गीत में राहुल एवं यशोधरा द्वारा कथित सामग्री का अभिनय प्रस्तुत करा–कर उसको छात्रों को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाया जाता जा सकता है

3. अर्थ कथन प्रणाली :

इस प्रणाली के सहारे शिक्षक कविता का स्वयं वाचन करते हुए, स्वयं उनका अर्थ बताते हुए चलता है । इस प्रणाली में छात्र केवल श्रोता है ।

4. व्याख्या प्रणाली :

इस प्रणाली में अध्यापक स्वयं या छात्रों से कविता का सस्वर वाचन करवा लेता है । परंतु शब्दार्थ बताते हुए प्रासंगिक कथाओं की चर्चा करते हुए छंद अलंकार आदि की चर्चा करता है ।

5. खण्डान्वय प्रणाली :

इस प्रणाली को प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहा जाता है । इसमें प्रश्नोत्तर के मध्यम से कविता पाठ सिखाया जाता है ।

6. व्यास प्रणाली :

व्यास जी जिस तरह कथा, भावों, विचारों को स्पष्ट करते थे उसी इस प्रणाली में कविता पाठ करते समय भावों, विचारों, नीतियों को स्पष्ट करने के लिए मुख्य कथा के साथ–साथ कई(गौण कथा) अंतर्कथाओं का विवरण प्रस्तुत करते हैं । छात्रों के बौद्धिक स्तर, मानसिक स्तर अभिरुचि क्षमता को देखते हुए भी यह प्रणाली उच्च्य माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयोगि है ।

7. तुलना प्रणाली :

इस विधि में शिक्षक पाठ्य कविता की तुलना उसी भाव को व्यक्त करनेवाली अन्य कविताओं के साथ करके पाठ्य कविता के भावार्थों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

8. समीक्षा प्रणाली :

इस प्रणाली में काव्य के गुण दोषों का विवेचन करके उनके यथार्थ को आँका जाता है । इसमें शिक्षक केवल सहायक का ही कार्य करता है । वह पुस्तकों के नाम, संदर्भ ग्रंथों के नाम एवं कुछ तथ्यों से छात्रों को परिचित करा देते हैं । इस प्रणाली में तीन तथ्यों की समीक्षा की जाती है । भाषा की समीक्षा, काव्यगत भावों की समीक्षा, कविता पर पड़नेवाले प्रभावों की समीक्षा ।

9. रसास्वादन प्रणाली :

इस प्रणाली में शिक्षक का उद्देश्य छात्रों को कविता का अर्थ बतलाना ही वरन वह छात्रों को कविता का आनंद लेने की क्षमता प्रदान करता है । शिक्षक कवि का परिचय, विशेष प्रसंग, प्रेरक स्थल, अति आवश्यक व्याख्या आदि की तरफ छात्रों का ध्यान आकृष्ट करते हुए छात्रों को रसानुभूति की प्रबल प्रेरणा देता है ।

यदि आपके मन में आगे बढ़ने की लगन
और जिज्ञासा है तो सब कुछ संभव है
प्रगतिशील बनिए ।

अभिनव गीत

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1) जीने की कला को सिखाना ।
2) कष्ट को सहने की कला सिखाना ।
3) सबको सुख देकर जीना सिखाना ।
4) फूलों के उपयोग के बारे में बताना ।
5) फूलों के नाम और रंग को जानना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* फूलों जैसे गुणों को अपनाना, फूल परहित के लिए अपना जीवन अर्पित करते हैं, साथ ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं । उसी प्रकार हर एक को आदर्श जीवन जीने का सीखना ।
* फूल, पक्षी, प्राणियों को सांकेतिक रूप में रखकर उनसे पानेवाले गुणों की तालिका बनाकर समझाना ।
* सबको सुख देकर जीने के बारे में बताने छात्रों को अवसर देना । छात्र इससे संबंधित घटनाओं को लिखकर लाते हैं और व्यक्त करते हैं ।
* फूलों के उपयोग से संबंधित विचार लिखकर लाएँगे कक्षा में सुनाएँगे उनसे सीखनेवाले अंशों के बारे में भी बताएँगे ।
* फूलों के नाम व रंग की तालिका रचाकर कक्षा में प्रदर्शन कराना । छात्रों में चित्र लिखने की कुशलता भी बढ़ाना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

❖ उत्साह की भावना
❖ सहनशक्ति
❖ सुंदरता, निर्मलता
❖ शुद्ध मन

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) गीत प्रणाली : छात्र पद्यांश को गाते हैं । सरल रूप से उसका अर्थ समझ लेते हैं साथ ही अर्थ बताने का प्रयास करते हैं ।

2) प्रश्नोत्तर प्रणाली : छात्रों को समूहों में बाँट कर आपस में चर्चा करने अवसर देना है । एक समूहवाले प्रश्न पूछेंगे तो दूसरे समूहवाले उत्तर देंगे इसी प्रकार पद्यांश का सार समझाना ।

3) अर्थ बोध प्रणाली : पद्यांश का सारांश सरल रूप में बताने के साथ कविता पाठ समझाना ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : गीत प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

* गाने में रुचि
* उच्चारण
* अभिव्यक्ति शैली
* भाव को समझकर उतार–चढ़ाव के साथ गाना
* समग्र प्रस्तुतीकरण

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) फूलों से हम क्या सीख सकते हैं?
2) फूल सब जग को कैसे सुशोभित करते हैं ?
3) फूल हमें कैसे जीने को कहते हैं ?
4) फूल की छवि कैसी होती है ?
5) जीवन में कष्ट को कैसे सहना चाहिए ?

परीक्षा की आग में तपकर ही मनुष्य
सोने के समान चमकता है ।

शिक्षा

पाठांश : इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- कवि ठाकुर गोपालशरण सिंह जी का परिचय ।
- शिक्षा अनुभवों से प्राप्त होती है इसका बोध कराना ।
- परिश्रम के बिना सुख प्राप्त नहीं होता इसको अवगत कराना ।
- प्रकृति सबसे बड़ा गुरु है ।
- हमारे इर्द–गिर्द घटनेवाली घटनाओं को गौर से अवलोकन करने प्रेरणा देना ।
- छात्र आज तक क्या–क्या सीखे हैं उसको जाँचना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

- ➢ कवि ठाकुर गोपालशरण सिंह जी का परिचय छात्रों द्वारा ही कराना ।
- ➢ कवि के अनुभवों से प्रेरित होकर अपने आस–पास के कुछ प्राकृतिक परिवेशों से किस प्रकार की शिक्षा मिलती है छात्र को इसे व्यक्त करने का अवसर देना ।
- ➢ शिशु, वीर,चंगा, विहग, मुरली, मेघ, झरना, नदी, शशि और पतंगों का परिचय कराना । उनके लक्षण और स्वरूप को अवगत कराना, चित्रों द्वारा समझाना ।
- ➢ प्रकृति प्रेम और कर्तव्य परायणता का परिचय कराना ।
- ➢ देखी गयी व आस–पास घटनेवाली घटनओं से प्राप्त होनेवाली शिक्षा के बारे में चर्चा कर अपने अनुभवों को छात्र को व्यक्त करने का मौका देना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- ❖ अनुभव ही अमृत है
- ❖ श्रम गौरव
- ❖ त्याग
- ❖ परोपकार
- ❖ प्रकृति प्रेम
- ❖ जागतिक सत्य

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) चित्र प्रणाली : छात्रों को समूहों में बाँटकर चित्र व सामग्री तैयार कर अपने विचार बताने अवसर देना । छात्र खुद चित्र व सामग्री को तैयार करेंगे और अपने समूह में चित्रों को गौर से देखेंगे पद्य का सार जानेंगे और अभिव्यक्त करेंगे । चित्रों के सहारे पद्यांश में निहित अंशों को जानेंगे ।

2) गीत प्रणाली : सुश्राव्य रूप से गीत को गाकर उसके भाव को समझना ।

3) अभिनय प्रणाली : एक–एक छात्र आकर एक प्राकृतिक परिवेश का प्रतिनिधि बनकर उसका अनुभव अपने शब्दों में बताकर अभिनय करता है ।

4) चर्चा प्रणाली : अपने अनुभवों को बाँट लेने एक अवसर प्रदान करना । परस्पर चर्चा में भाग लेते हैं और निर्णय कर अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : चित्र प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- चित्र तैयार करने में रुचि
- सामग्री की उपयुक्तता
- प्रकटीकरण में खरापन
- उद्देश्य का विवरण
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) शिशु दुनिया में आकर सबसे पहले क्या सीखता है और कैसे सीखता है ?

2) पतंग ने प्रेम निभान कैसे सीखा है ?

3) नदियाँ किस प्रकार बहती हैं ?

4) अनुभव के बल पर आपने क्या सीखा है ?

5) झरनों ने झरना कैसे सीखा है ?

6} **संदर्भ सूची :**

* शिक्षा से संबंधित अधिक जानकारी google में ढूँढ सकते हैं ।

* सीखो नामक कविता से कुछ अंश ले सकते हैं ।

कोई नहीं पराया

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

* विश्व बंधुत्व भाव का विकास करना।
* मानवीयता गुण का विकास करना।
* हर प्रकार के भेद-भाव को दूर करने के लिए प्रेरित करना।
* कवि का परिचय कराना।
* सृजनात्मकता का विकास करना।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* छात्रों में निहित मानवीय गुण के सहारे कवि का भाव और कविता का आशय समझाना।
* वसुदैवकुटुंबकम भाव को जागृत करना।
* विश्व मानव होने के लिए प्रेरणा देना जैसे किसी एक वैज्ञानिक के अनुसंधान देश-काल के परे सारे विश्व के लिए उपयोगी होते हैं।
* विश्व प्रेम , विश्व भ्रातृत्व के गुणों का विकास करना |

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- मानवीयता
- विश्व भ्रातृत्व
- **मानव बंधुत्व**
- **राष्ट्रीय ऐक्यता**

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

चर्चा प्रणाली :

कविता का आशय समझने के लिए छात्रों के लिए ही अवसर देना । छात्र टोली में बैठकर चर्चा करके प्रत्येक टोली से कविता का आशय व्यक्त करने के लिए मौका देना। शिक्षक इस प्रक्रिया का अवलोकन करके कविता के आशय को स्पष्ट करना।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन के लिए इन आधार बिंदुओं को रख सकते हैं।

- विषय में रुचि
- भाव
- सहभागित्व
- शैली
- समग्र प्रस्तुति

आ)संकलनात्मक मूल्यांकन के लिए मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रश्न पूछ सकते हैं।

1. कवि किसे अपना घर मानते हैं ?
2. कवि मानव और मनुजत्व में किसे श्रेष्ठ मानते है ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

मेरा धर्म न कुछ स्याही-शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम है –

इन पंक्तियों का भावार्थ :

कवि का धर्म इस दुनिया में स्थित किसी लिखित धर्म का गुलाम नहीं है । कवि कहते हैं कि यदि मनुष्य के मन में प्यार हो तो प्रत्येक व्यक्ति में भगवान को देख सकते हैं |

> वही उन्नति कर सकता है,
>
> जो स्वयं अपने को उपदेश देता है ।
>
> – स्वामी रामतीर्थ

सूर श्याम (पद)

इस पद्य के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :-

1. सूरदास के पद के बारे में बताना ।
2. सूरदास के बारे में जानकारी देना ।
3. बलराम और यशोदा के बारे में जानकारी देना ।
4. भगवान श्री कृष्ण का काल्पनिक चित्र तैयार करना ।
5. इस पद को सुमधुर कंठ से गाकर सुनाना ।

संकल्पनाओं का परिचय :-

1. शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :-

- श्रीकृष्ण के बारे में छात्र जो कुछ जानकारी रखता है उसे व्यक्त करने को अवसर प्रदान करना। ।
- पद्य की विधा- पद रचना से संबंधित सामान्य जानकारी देना एवं पद रचना के अंतर्गत आनेवाले नियमों का पालन करना ।
- बालक भी अपने घर में भाई-बहनों से झगडा करता है, माँ से शिकायत करता है उस अनुभव को व्यक्त करने को अवसर प्रदान करना ।

2. संकल्पना में निहित जीवन मूल्य :-

- सहानुभूति
- प्रशंसा
- सहकार
- वात्सल्य
- करुणा
- स्नेहभाव

3. संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :-

1.गायन :- छात्रों को सूरदास के पद सुमधुर स्वर में गाकर सुना सकते हैं ।

2. चर्चा प्रणाली :- अपने घर में भाई-बहनों के बीच में हुए झगडे से संबंधित चर्चा करा सकते हैं ।

3. विडियो देखकर सारांश बताना ।

4. चित्र प्रणाली : माता यशोदा, कृष्ण, बलराम के चित्र देखकर आलोचना कर सकते हैं ।

5. सूरदास के कुछ पद सुनाकर, पढवाकर, भावार्थ लिखने को प्रेरित कर सकते हैं ।

4} मूल्यांकन :–

अ) रचनात्मक मूल्यांकन में चर्चा प्रणाली द्वारा निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

आ) सूरदास के पद को सुमधुर स्वर में छात्र गा सकता है।

- स्वर–कंठ
- उच्चारण
- भाव
- तन्मयता
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1. कृष्ण और बलराम की तरह आपके घर में भाई–भाई के बीच झगडे होते हैं क्या? क्यों?
2. सूरदास के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर लिखिए ।
3. बलराम कृष्ण को क्यों सताता है?
4. माता यशोदा को कृष्ण का मुख देखकर क्या लगता है?
5. इन पदों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।

5} **संकल्पना से संबंधित (अध्यापक द्वारा) पूछे जानेवाले विचार** :

पद

पद काव्य रचना की गेय शैली है। इसका विकास लोकगीतों की परंपरा से माना जाता है। यह मात्रिक छन्द की श्रेणी में आता है। प्राय: पदों के साथ किसी न किसी राग का निर्देश मिलता है। पद विशेष को सम्बन्धित राग में ही गाया जाता है। "टेक" इसका विशेष अंग है। हिन्दी साहित्य में पद शैली की दोपरम्पराएँ मिलती हैं। एक सन्तों के "सबदों" की दूसरी कृष्णभक्तों की पद-शैली है , जिसका आधार लोकगीतों की शैली होगा।

मध्यकाल में भक्ति भावना की अभिव्यक्ति के लिए पद शैली का प्रयोग हुआ। सूरदास का समस्त काव्य-व्यक्तित्व पद शैली से ही निर्मित है। "सूरसागर" का सम्पूर्ण कवित्वपूर्ण और सजीव भाग पदों में है।

परमानन्ददास, नन्ददास, कृष्णदास, मीराबाई, भारतेंदु हरिश्चंद्र आदि के पदों में सूर की मार्मिकता मिलती है। तुलसीदास जी ने भी अपनी कूछ रचनाएँ पदशैली में की हैं। वर्तमान में पदशैली का प्रचलन नहीं के चरावर है परन्तु सामान्य जनता और सुशिक्षित जनों में सामान्य रूप से इनका प्रचार और आकर्षण है।

मीराबाई के पद

अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई॥
माता छोडी पिता छोडे छोडे सगा भाई।
साधु संग बैठ बैठ लोक लाज खोई॥
सतं देख दौड आई, जगत देख रोई।
प्रेम आंसु डार डार, अमर बेल बोई॥
मारग में तारग मिले, संत राम दोई।
संत सदा शीश राखूं, राम हृदय होई॥
अंत में से तंत काढयो, पीछे रही सोई।
राणे भेज्या विष का प्याला, पीवत मस्त होई॥
अब तो बात फैल गई, जानै सब कोई।
दास मीरां लाल गिरधर, होनी हो सो होई॥

5} **संदर्भ सूचि :–**

1) सूरदास से संबंधित अधिक जानकारी google में देख सकते हैं ।
2) “suradas ke pad” you tube में देख सकते हैं ।
3) भगवद गीता, सूरसारावली, सूरसागर आदि ग्रंथों का उपयोग कर सकते हैं ।
4) कन्नड के आदिकवियों से संबंधित स्कूल के ग्रंथालय की किताबें ।
5) शब्दकोश

तुलसी के दोहे

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- गोस्वामी तुलसीदास जी का परिचय कराना ।
- भक्तिकाल व रामभक्ति शाखा का परिचय कराना ।
- दोहा/साखी का परिचय कराना ।
- दोहों के दौरान नीति को समझाना ।
- दोहों में निहित मूल्यों को समझाना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

- गोस्वामी तुलसीदास जी का परिचय छात्र पद्यांश द्वारा कर लेंगे ।
- भक्तिकाल का परिचय परिचय कराके रामभक्ति शाखा का परिचय कराएँगे ।
- दोहे का अर्थ समझाकर दोहों को गाने का सिखाएँगे ।
- दोहों में निहित नीति को अवगत कराएँगे । जैसे : मुखिया के लक्षण, संत का स्वभाव, दोहों में विवेकयुत व्यवहार, अच्छे गुणों को अपनाना, दया-धर्म का महत्व, अभिमान, त्याग, राम पर भरोसा, राम-नाम जाप का व्याख्यान ।
- दोहों से सीखे जानेवाले मूल्यों के बारे में बताना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- विवेक
- त्याग
- अभिमान
- दया भाव

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) खण्डान्वय प्रणाली : इसे गद्य शिक्षण में प्रश्नोत्तर प्रणाली कहा जाता है । यह प्रणाली उन पद्यों को पढ़ाने में काम आती है जिनमें विशेषणों का विस्तार हो, भावों की भीड़ हो, घटनाओं की घटा हो और एक-एक बात अलगाए बिना अर्थ स्पष्ट कहने में बाधा पड़ती हो । एक दोहा उदाहरण के रूप में लिया गया है ।

अधर धरत हरिके परत, ओठ डीठि पट-जोति ।
हरित बाँसकी बाँसुरी, इन्द्र-धनुष सम होति ॥

इस दोहे को खण्डान्वय प्रणाली से पढ़ाने के लिए निम्नलिखित प्रश्नोत्तर करने होंगे ।

प्रश्न : हरि अपने अधरपर क्या धरते हैं ?

उत्तर : बाँसुरी ।

प्रश्न : बाँसुरी किस वस्तु की बनी हुई है ?

उत्तर : बाँस की ।

प्रश्न : कैसे बाँसकी ?

उत्तर : हरे ।

प्रश्न : अधर पर हरी बाँसुरी रखने से क्या हो रहा है ?

उत्तर : ज्योति पड़ रही है ।

प्रश्न : किस वस्तु की ?

उत्तर : ओठ की ।

प्रश्न : और ?

उत्तर : डीठ की (दृष्टि की)

प्रश्न : और ?

उत्तर : पट की ।

प्रश्न : इससे क्या हो रहा है ?

उत्तर : बाँसुरी इंद्र धनुष के समान दिखाई दे रही है ।

प्रश्न : क्यों ?

उत्तर : क्योंकि विभिन्न वस्तुओं की ज्योति अलग–अलग पड़ रही है ।

प्रश्न : ओठ की कैसी कांति पड़ रही है ?

उत्तर : लाल ।

प्रश्न : दृष्टि की कैसी पड़ रही है ?

उत्तर : नीली ।

प्रश्न : पट की कैसी पड़ रही है ?

उत्तर : पीली ।

प्रश्न : केवल तीन ही रंगों से इंद्र धनुष की सृष्टि कैसे हुई ?

उत्तर : नीला, पीला और लाल ये ही तीन प्रधान रंग हैं । इन्हीं के मेल से सातों रंग बनते हैं ।

प्रश्न : कैसे ?

उत्तर : लाल और नीले को मिलाकर बैंगनी, नीले और पीले को मिलाकर हरा, पीले और लाल को मिलाकर नारंगिया और नीले को हल्का कर दिया जाय तो आसमानी रंग बन जाता है । इस प्रकार सातों रंग बन जाते हैं ।

प्रश्न : क्या उसे इंद्र धनुष कहकर कवि केवल सात रंगों का परिचय मात्र देना चाहते हैं ?
उत्तर : नहीं, उसका तात्पर्य इंद्र धनुष की सुंदरता का बोध कराना है ।
प्रश्न : इंद्र धनुष कब निकलता है ?
उत्तर : जब बादल होते हैं ।
प्रश्न : यहाँ बादल कहाँ हैं ?
उत्तर : स्वयं कृष्णजी ही घनश्याम हैं ।
प्रश्न : तब बाँसुरी की सुंदरता कैसे प्रकट हुई ?
उत्तर : जब साँवले रंगवाले बादल के समान श्रीकृष्णजी अपने ओठों पर हरे बाँसकी बाँसुरी रखते हैं तब उनके ओठ, नेत्र तथा पीतांबर का प्रकाश पड़ने से वह बाँसुरी बादल में इंद्र धनुष के समान बड़ी मनोहर लगने लगती है ।

यह प्रणाली सब स्थानों पर तथा सब प्रकार के पद्यों या कविताओं की शिक्षा में काम नहीं आ सकती । प्रायः वर्णनात्मक तथा ऐतिहासिक पद्य ही इस प्रणाली से पढ़ाए जा सकते हैं ।

तुलसी के दोहे के प्रथम दोहे को खण्डान्वय प्रणाली में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं इसके लिए प्रश्नों का विवरण दिया गया है ।

* मुखिया और मुख का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
* तुलसी ने किसको मुखिया कहा है ?
* मुख का अर्थ मुँह है या चेहरा है ?
* खान–पान का अर्थ क्या है ?
* क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ कौन–कौन हैं ?
* शरीर के सभी अंगों का पालनहार कौन है ?
* विवेक के साथ शरीर की देखभाल क्यों करना है ?

2) चर्चा प्रणाली : छात्रों को समूहों में बाँट कर विविध दोहाओं को प्रस्तुत करने कहेंगे साथ ही उससे संबंधित प्रश्न करके छात्रों से ही उत्तर निकलवाएँगे । आपस में चर्चा कर पद्य का सार जानेंगे ।

3) पी.पी.टी : अध्यापक पद्य से संबंधित चित्रों सहित विवरण दिखाएँगे । छात्र चित्र देखकर और विवरण पढ़कर सार जानने का प्रयास करते हैं ।

4} मूल्यांकन :

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : खण्डान्वय प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- प्रश्न करने में रुचि
- उत्तर देने में रुचि
- प्रश्नोत्तर में भाग लेना
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) कवि कब तक दयालु बनकर रहने कहते हैं ?
2) तुलसीदास का जन्म कहाँ हुआ ?
3) तुलसी के अनुसार विपत्ति के साथी कौन हैं ?
4) तुलसीदास के माता–पिता कौन थे ?

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

दोहा : मात्रिक अर्द्धसम छंद है । दोहे के चार चरण होते हैं । इसके विषम चरणों (प्रथम तथा तृतीय) में 13–13 मात्राएँ और सम चरणों (द्वितीय और चतुर्थ) में 11–11 मात्राएँ होती हैं । ‘बड़ा हुआ तो पंक्ति का आरंभ ज–गण से ही होता है, सम चरणों के अंत में एक गुरु और एक लघु मात्रा का होना आवश्यक होता है अर्थात अंत में लघु होता है ।

साखी : आँखों से देखी अथवा भली प्रकार समझी हुई बात । ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में, महापुरुषों, संतों साधु महात्माओं आदि के वे पद जिनमें वे अपने अनुभव, मत या साक्षात्कार की प्राप्ति के लिए अन्य साधु महात्माओं के वचन साक्षी रूप में उद्धृत करते हैं ।

6} **संदर्भ सूची :** * दोहों से संबंधित अधिक जानकारी google में ढूँढ सकते हैं ।

व्याकरण शिक्षा

व्याकरण ऐसा शास्त्र है जो हमें यह बताता है कि किस वाक्य में कौन सा शब्द कहाँ रहना चाहिए। व्याकरण तो भाषा के सर्वमान्य रूप का संरक्षण करता है, लेकिन भाषा तो फिर भी व्याकरण के नियमों से इधर–उधर हो ही जाती है ।

व्याकरण का महत्व :

व्याकरण भाषा को अव्यवस्थित एवं उच्शृंखल होने से बचाता है । अतः भाषा के स्वरूप को शुद्ध रखने, उसको विकृतियों से बचाने के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है । व्याकरण भाषा का सहचर है । भाषा रूप भवन की रचना शब्द रूपी ईंट व्याकरण रूपी सीमेंट के समुचित योग से संभव है ।

किसी भाषा के व्याकरण के तीन मूल तत्व होते हैं –वाक्य, शब्द, अक्षर ।

व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य :

भाषा अनुकरण से सीखी जाती है पर भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए हमें उसके सर्वमान्य रूप को सीखना होता है । भाषा के सर्वमान्य रूप को जानने के लिए व्याकरण को जानना होता है । अतः व्याकरण शिक्षण के कुछ उद्देश्य हैं –

- छात्रों को ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर शब्द–योजना, शब्द शक्तियों एवं शुद्ध वर्तनी का ज्ञान कराना ।
- छात्रों को वाक्य–रचना के नियम, विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना ।
- छात्रों को शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का प्रसंगानुकूल अर्थ निकालना और स्वराघात एवं बलाघात के अनुसार अर्थ बोध कराने के योग्य बनाना ।
- छात्रों में भाषा के गुण–दोष परखने की रुचि उत्पन्न करना ।

व्याकरण शिक्षण की प्रणालियाँ :

1. **निगमन प्रणाली** : प्राचीन काल में छात्र आश्रमों में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे, जब उन्हें कुछ नियम, उपनियम बता दिये जाते थे, छात्रा उन्हें रट लेते थे, इस प्रणाली को निगमन प्रणाली कहते हैं । इस प्रणाली के दो रूप है ।

   अ) **सूत्र प्रणाली** : अध्यापक छात्रों को कुछ सूत्र बता देते हैं और शिक्षार्थी उन्हें समझे बिना ही कंठस्थ कर लेते हैं ।

   आ) **पुस्तक प्रणाली** : यह सूत्र प्रणाली का ही परिवर्तित रूप है । इस विधि में नियमों का ज्ञान कराने हेतु छात्रों को व्याकरण की पुस्तक दी जाती है । छात्र उनसे से नियम रट लेते हैं ।

2. **आगमन प्रणाली :** इस प्रणाली में छात्र उदाहरणों की सहायता से सामान्य सिद्धांत निकालते हैं । आगमन प्रणाली में चार पदों का अनुसरण करके छात्र व्याकरण के नियम व उपनियम खुद निकालते हैं ।

अ. सर्व प्रथम छात्रों के सामने एक ही प्रकार के कई उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं ।
आ. निरीक्षण : छात्र इन उदाहरणों को देखते हैं, इनका विश्लेषण करते हैं और इनमें जो समानता होती है उसका पता लगाते हैं ।
इ. सामान्यीकरण : इस समानता को वे नियम का रूप देते हैं ।
ई. परीक्षण : निकाले गये नियमों की सत्यता हेतु उनके परीक्षण करते हैं ।

यह प्रणाली सरस, रुचिकरण व ग्राह्य है, क्योंकि इस प्रणाली में छात्रों को स्वयं सीखने का अवसर मिलता है, जिससे उनका मानसिक विकास होता है, इस प्रकार सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है ।

3. **समवाय प्रणाली :**

इस प्रणाली के प्रतिपादकों का मत है कि व्याकरण की शिक्षा स्वतंत्र रूप से न देकर साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वानों की रचनाएँ पढ़ाई जाए । इसके अंतर्गत मौखिक एवं लिखिए कार्य कराते वक्त, गद्य की पुस्तक पढ़ाते, रचना कर्य कराते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है ।

4. **खेल विधि :**

इस प्रणाली से खेल में व्याकरण सिखाने से व्याकरण की नीरसता छात्रों के मार्ग में बाधक नहीं बनेगी । खेल विधि से छात्र (व्यक्तिगत तथा सामूहिक खेलों में) सिद्धांतों को हृदयंगम कर लेंगे । खेल-खेल में शब्द भेद, लिंग भेद, वचन आदि का ज्ञान करा सकते हैं ।

दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना आपका कर्तव्य ही नहीं है, बल्कि एक आनंद है जो आपको प्रसन्नता और अच्छी सेहत प्रदान करती है ।

काल

इस व्याकरणांश के द्वारा परिचय चुनी गयी संकल्पनाएँ :

1. व्याकरण के बारे में सामान्य जानकारी देना ।
2. काल के बारे में अर्थ, परिभाषाएँ बताना ।
3. काल के प्रकार – भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत काल के बारे में बताना ।
4. भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत काल के प्रकारों की जानकारी देना ।
5. सभी अंशों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना ।

संकल्पनाओं का परिचय :–

1.शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :

- व्याकरण के बारे में कुछ जानकारी रखता है उसे व्यक्त करने को अवसर प्रदान करना। ।
- काल से संबंधित सामान्य जानकारी देना एवं काल के अंतर्गत आनेवाले नियमों का पालन करना ।
- बालक अपने घर में जो भाषा बोलता है, उस भाषा में काल का प्रयोग कैसे करता है उस अनुभव को व्यक्त करने को अवसर प्रदान करना ।

2.संकल्पना में निहित जीवन मूल्य :

स्पष्ट भाषा

प्रशंसा

व्याकरण का बोध

भाषा सुधार

आत्म विश्वास

3.संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :

1. मातृभाषा प्रणाली :– छात्र अपनी मातृभाषा के व्याकरण को बहुत अच्छी तरह समझता है, उसके जरिए काल की जानकारी दे सकते हैं ।
2. चर्चा प्रणाली :– मातृभाषा एवं हिन्दी के काल संबंधित चर्चा करा सकते हैं ।
3. विडियो देखकर सारांश बताना ।

4. चित्र प्रणाली : काल से संबंधित चित्र, चमक पटटी देखकर आलोचना कर सकते हैं ।
5. काल के सामान्य नियमों को लिखने को प्रेरित कर सकते हैं ।

4} मूल्यांकन :

अ) रचनात्मक मूल्यांकन में चर्चा प्रणाली द्वारा निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं ।

- चर्चा में भाग लेने में रुचि
- उच्चारण
- भाव
- विषय प्रवाह
- समग्र प्रस्तुति

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1. व्याकरण में काल का महत्व कितना है स्पष्ट कीजिए । (मौखिक)
2. काल का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकारों को स्पष्ट कीजिए ।
3. काल के उप प्रकारों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

काल और काल के भेद

क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या कार्य सम्पन्न होने का समय (काल) ज्ञात हो वह **काल** कहलाता है। काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं -
काल (Tense) को किस तरह परिभाषित किया जाना चाहिए ?
क्रिया के जिस काल रूप से उसके होने का बोध होता है उसे काल कहते हैं ।

काल के तीन भेद हैं-

1. भूत काल
2. वर्तमान काल
3. भविष्य काल

1. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय (अतीत) में कार्य होने का बोध हो वह भूतकाल कहलाता है ।

जैसे- (i) बच्चा गया ।

(ii) बच्चा गया है ।

(ii) बच्चा जा चुका था ।

ये सब भूतकाल की क्रियाएँ हैं क्योंकि'गया', 'गया है', 'जा चुका था'क्रियाएँ भूतकाल का बोध कराती है ।

भूतकाल के छः भेद हैं-

(i) सामान्य भूत

(ii) आसन्न भूत

(iii) अपूर्ण भूत

(iv) पूर्ण भूत

(v) संदिग्ध भूत और

(vi) हेतुहेतुमद भूत

(i) सामान्य भूत - क्रिया के जिस रूप से (या, ये, यी, चुका, चुकी, चुके) का बोध होता है, वह सामान्य भूत है ।

जैसे- बच्चा गया । श्याम ने पत्र लिखा ।

(ii) आसन्न भूत- क्रिया के जिस रूप से अभी-अभी (या है, ये है, यी है या चुका है, चुकी है, चुके है) निकट भूतकाल में क्रिया का होना प्रकट हो, वह आसन्न है।

जैसे- निशांत गया है । सुधा आई है ।

(iii) अपूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से- रहा था, रही थी, रहे थे- का बोध हो ।

जैसे-रामू आ रहा था ।

(iv) पूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है उसे पूर्ण भूत कहते हैं । यानी -आया था, आयी थी, आये थे, चुका

था, चुकी थी, चुके थी- क्रिया के साथ लगे तो समझ लीजिए की वाक्य पूर्ण भूत है ।
जैसे-बच्चा आया था ।

(v) संदिग्ध भूत- क्रिया के जिस रूप से भूतकाल का बोध तो हो किन्तु कार्य के होने में संदेह हो वहाँ संदिग्ध भूत होता है।
जैसे-श्याम ने पत्र लिखा होगा ।

(vi) हेतु-हेतु मदभूत- क्रिया के जिस रूप से बीते समय में एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना आश्रित हो ।
जैसे-यदि सुधा ने कहा होता तो मैं अवश्य जाता ।

2. वर्तमान काल

इसमें क्रिया का आरंभ हो चुका होता है लेकिन समाप्ति नहीं होती । दूसरे शब्दों में क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए उसे वर्तमान काल कहते हैं ।
जैसे- भक्त माला फेरता है ।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं-
(i) सामान्य वर्तमान
(ii) अपूर्ण वर्तमान
(iii) संदिग्ध वर्तमान

(i) सामान्य वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य वर्तमान काल में सामान्य रूप से होता है वहाँ सामान्य वर्तमान होता है।
जैसे- बाबू रोता है ।

(ii) अपूर्ण वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य अभी चल ही रहा है, समाप्त नहीं हुआ है वहाँ अपूर्ण वर्तमान होता है।
जैसे- यज्ञ स्कूल जा रहा है ।

(iii) संदिग्ध वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में कार्य के होने में संदेह का बोध हो वहाँ संदिग्ध वर्तमान होता है ।

जैसे- रमेश इस समय खाता होगा ।

3. भविष्यत काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा वह भविष्यत काल कहलाता है।

जैसे- यज्ञ स्कूल जाएगा ।

भविष्य काल के दो भेद हैं-

(i) सामान्य भविष्यत

(ii) संभाव्य भविष्यत

(i) सामान्य भविष्यत - क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने का बोध हो उसे सामान्य भविष्यत कहते हैं ।

जैसे- हम घूमने जाएँगे ।

(ii) संभाव्य भविष्यत - क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना का बोध हो वहाँ संभाव्य भविष्यत होता है ।

जैसे- शायद वह दिन आए ।

5} **संदर्भ सूची :–**

1) काल से संबंधित अधिक जानकारी google में देख सकते हैं ।

2) “hindi kaal” you tube में देख सकते हैं ।

3) व्याकरण से संबंधित पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं ।

4. दसवीं कक्षा की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक

संधि (व्याकरण)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- ❖ संधि का अर्थ और भेदों का परिचय ।
- ❖ स्वर, व्यंजन और विसर्ग संधि के भेदों का परिचय ।
- ❖ शब्दों का विच्छेद कर संधि पहचानना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* संधि : दो वर्ण या अक्षरों के मेल से होनेवाले विकार । इस विचार को छात्र उदाहरण सहित जानते हैं । संधि के भेद स्वर, व्यंजन और विसर्ग संधि का अर्थ जानते हैं साथ ही उदाहरण देते हैं ।

* स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि का अर्थ जानकर उसके उदाहरण बताते हैं ।

* शब्दों का विच्छेद करना अध्यापक सिखाते हैं, छात्र शब्दों का विच्छेद कर संधि को पहचानते हैं ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- ❖ आत्मविश्वास
- ❖ सहकारिता
- ❖ धैर्य

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) आगमन प्रणाली : इस प्रणाली को सहयोग प्रणाली कहते हैं । इस विधि द्वारा छात्र चार आयामों के अनुसार संधि से संबंधित विचार आसानी से समझ लेते हैं । चार आयाम हैं – 1) उदाहारण 2) तुलना और विश्लेषण 3) नियम निर्धारण 4) अभ्यास ।

अध्यापक संधि के उदाहरणों को पर्चियों में लिखकर छात्रों को देते हैं और संधि शब्दों का विच्छेद कर विकार पहचानकर बताते हैं । उसी प्रकार छात्र पर्चियों में लिखे शब्दों का उच्चारण करते हैं । विकार ध्वनि को पहचानते हैं ।

जैसे : शिव + आलय = शि<u>वा</u>लय

राजा + इंद्र = रा<u>जें</u>द्र

सदा + एव = स**दै**व

इति + आदि = इ<u>त्या</u>दि

ने + अन = **नय**न

स्वर संधि के शब्दों में इन ध्वनियों को छात्र पहचानते हैं ।

दीर्घ = आ, ई, ऊ, ॠ

गुण = ए, ओ, अर

वृद्धि = ऐ, औ

यण = य, व, र

अयादि = अय, आय, अव, आव

इस तालिका के अनुसार भी संधि को समझा सकते हैं ।

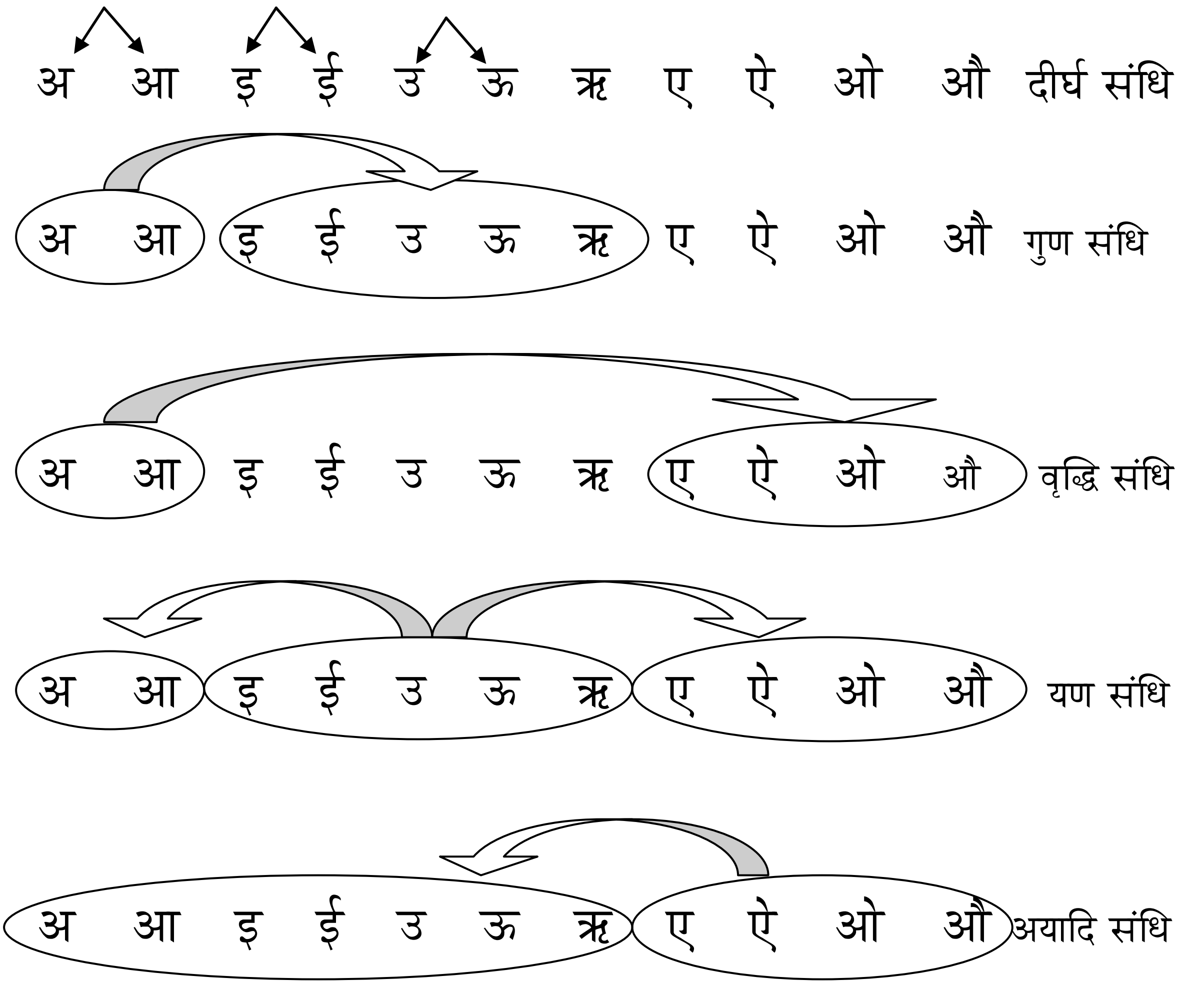

उपर्युक्त तालिका में गुण, वृद्धि, यण और अयादि शब्दों को सिखाते समय (Arrow) यह चिह्न जहाँ से शुरु होता है वह अक्षर/वर्ण पूर्व पद का अंतिम अक्षर होता है । जहाँ वह चिह्न जिस ओर दिखाता है वह उत्तर पद का प्रहला अक्षर होता है ।

2) **प्रश्नोत्तर प्रणाली** : छात्रों को समूहों में बाँट कर आपस में चर्चा करने अवसर देना है । एक समूहवाले प्रश्न पूछेंगे तो दूसरे समूहवाले उत्तर बताएँगे इसी प्रकार संधि का विचार समझते हैं ।

3) **खेल विधि** : इस विधि द्वारा छात्र खेलते-खेलते विचारों को समझते हैं ।

सूचना : सात छात्रों के हाथ में संधियों के नाम होते हैं । वे अपना परिचय खुद कर लेते हैं जैसे दीर्घ संधिवाला मैं दीर्घ संधि हूँ, मुझमें सवर्ण अक्षर आपस में मिलकर दीर्घ हो जाते हैं । इसी प्रकार गुण, वृद्धि, यण, अयादि, व्यंजन और विसर्ग संधिवाले भी बताते हैं ।

दूसरा अंश यह है कि संधि से संबंधित उदाहरण के पर्चियों को लेकर छात्र उनके पीछे खड़े हो जाते हैं । इससे अभ्यास कार्य व पुनरमनन कार्य भी होता है ।

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : आगमन प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं।

* उदाहरण बताता है
* विच्छेद करना
* संधि की पहचान
* विश्लेषण
* समग्र प्रस्तुतीकरण

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

1) संधि के कौन-कौन से भेद हैं ?

2) स्वर संधि के भेद कौन-से हैं ?

3) दीर्घ और गुण संधि के लिए दो-दो उदाहरण दो ।

4) व्यंजन संधि के लिए दो उदाहरण दो ।

समास (व्याकरण)

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- ❖ समास का अर्थ और भेदों का परिचय ।
- ❖ अव्यय, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व, द्विगु और बहुव्रीहि समासों का परिचय ।
- ❖ समासों का विग्रह कर समास पहचानना ।

संकल्पनाओं का परिचय :

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

* समास : इसका शब्दिक अर्थ है **संक्षेप** या **संयोग** ।
* कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास'का मुख्य प्रयोजन है।
* समास में कम से कम दो पदों का योग होता है।
* "एकपदीभाव: समास:"
* समास में समस्त होनेवाले पदों का विभक्ति प्रत्यय लुप्त हो जाता है ।
* समास के भेद अव्यय, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व, द्विगु और बहुव्रीहि का अर्थ समझाना ।
* सामासिक पदों का विग्रह कर समास को पहचानने का अभ्यास कराना ।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

- ▪ सहकारिता
- ▪ धैर्य
- ▪ आत्मविश्वास

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

1) आगमन प्रणाली : इस प्रणाली को सहयोग प्रणाली कहते हैं । इस विधि द्वारा छात्र चार आयाम – 1) उदाहारण 2) तुलना और विश्लेषण 3) नियम निर्धारण 4) अभ्यास के अनुसार समास का विग्रह करना और पहचानना सीख लेते हैं ।

* अध्यापक समास के उदाहरणों को पर्चियों लिखकर छात्रों को देते हैं और सामासिक शब्दों का विग्रह कर समास को पहचानकर बताते हैं । उसी प्रकार छात्र पर्चियों में लिखे शब्दों का उच्चारण करते हैं । सामासिक शब्द का विश्लेषण करते हैं । छात्र सामासिक शब्दों को श्यामपट पर लिखते हैं ।

जैसे : आजन्म = जन्म से लेकर

राजाश्रय = राजा का आश्रय

करकमल = कमल रूपी कर

पाप–पुण्य = पाप और पुण्य

चौमासा = चार मासों का समूह

वीणापाणि = जिसके पाणि में वीणा है ।

2) समवाय प्रणाली : इस विधि द्वारा अध्यापक श्यामपट बहुत से सामासिक शब्दों को लिखते हैं । छात्र उन शब्दों को सामासिक भेदों के अनुसार वर्गीकरण कर लिखते हैं । अध्यापक उसे जाँचकर सही मार्गदर्शन देते हैं ।

3) खेल विधि : इस विधि द्वारा छात्र खेलते–खेलते विचारों को समझते हैं ।

सूचना : छात्रों के हाथ में समासों के नाम होते हैं । वे अपना परिचय खुद कर लेते हैं तत्पुरुष समास वाला मैं तत्पुरुष समास हूँ, मुझमें शब्दों का विग्रह करने पर प्रत्यय लगते हैं । अन्य समासवाले छात्र भी इसी प्रकार बताते हैं और अनुभव के साथ सीख लेते हैं ।

अन्य छात्र उदाहरण के पर्चियों को लेकर छात्र उनके पीछे खड़े हो जाते हैं । इससे अभ्यास कार्य व पुनरमनन कार्य भी होता है ।

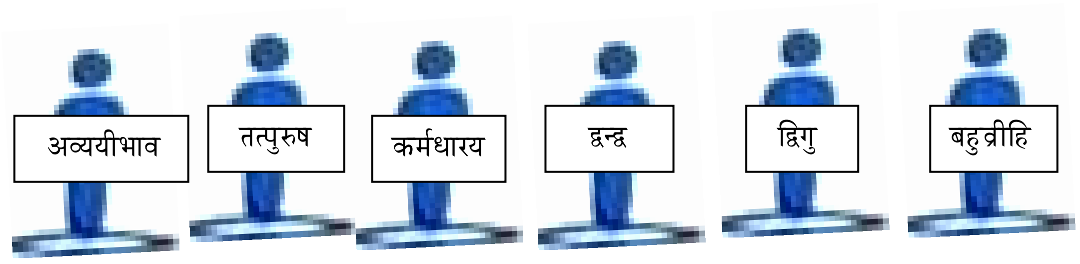

4} **मूल्यांकन :**

अ) रचनात्मक मूल्यांकन : आगमन प्रणाली के मूल्यांकन में निम्न आधार बिंदुओं को ध्यान में रख सकते हैं।

* उदाहरण बताता है
* विग्रह करना
* समास की पहचान
* विश्लेषण
* समग्र प्रस्तुतीकरण

आ) संकलनात्मक मूल्यांकन में पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक या लिखित रूप से पूछ सकते हैं ।

5) समास के कौन–कौन से भेद हैं ?

6) अव्ययीभाव समास के लिए दो उदाहरण दो।

7) तत्पुरुष के लिए दो उदाहरण दो ।

8) द्वन्द्व के लिए दो उदाहरण दो ।

9) द्विगु के लिए दो उदाहरण दो ।

☺

कारक

इस पाठ के द्वारा परिचय कराने चुनी गयी संकल्पनाएँ :

- वाक्य रचना में इनका महत्व समझाना।
- इन्हें प्रयोग करने से वाक्य में होनेवाले परिवर्तनों को समझाना

1} **शीर्षक व अर्थ स्पष्टीकरण की क्षमताएँ :**

- कारक के भेदों को समझाना।
- वाक्यों में प्रत्येक कारक का स्थान / महत्व को समझाना
- वाक्यों में प्रत्येक कारक का प्रभाव को समझाना।

2} **संकल्पना में निहित मूल्य :**

सही ढंग से भाषा का प्रयोग करना

3} **संकल्पना प्रस्तुतीकरण की प्रणालियाँ :**

अनेक प्रकार के वाक्यों को उदाहरण देकर उनमें आनेवाले कारकों का परिचय कराना।

4} **मूल्यांकन :**

अनेक प्रकार के वाक्यों को देकर उनमें आनेवाले कारकों को पहचानने का क्रियाकलाप कराकर मूल्यांकन कर सकते हैं।

अ)रचनात्मक मूल्यांकन के लिए इन आधार बिंदुओं को रख सकते हैं।

- विषय में रुचि
- पहचानना
- सहभागित्व
- स्पष्टता
- समग्र प्रस्तुति

आ)संकलनात्मक मूल्यांकन के लिए मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रश्न पूछ सकते हैं।

5} **संकल्पना से संबंधित पूछे जानेवाले विचार :**

ने प्रत्यय को कब प्रयोग करना है?

जब वाक्य सकर्मक भूतकाल (अपूर्ण भूतकाल को छोड़कर) में हो

तब कर्ता के साथ ने प्रत्यय जुड़ता है।

ने प्रत्यय जुड़ते ही क्रिया का रूप, कर्ता के लिंग वचन के अनुरूप न होकर कर्म के लिंग वचन के अनुरूप हो जाता है।

कर्म के साथ को प्रत्यय जुड़ने से और कर्म लुप्त रहने से क्रिया का रूप एक वचन पुल्लिंग में रहता है।

अपवाद

बोल, भूल, लग, चुक, सक –इन क्रियाओं के साथ ने प्रत्यय नहीं जुड़ता है।

'ने' प्रत्यय का प्रयोग

'ने' कर्ताकारक है । बिना प्रत्यय चिह्न के भी कर्ताकारक का प्रयोग होता है । 'अप्रत्यय कर्ताकारक' में 'ने' का प्रयोग न होने के कारण वाक्य रचना में कोई खास कठिनाई नहीं होती । 'ने' के प्रयोग में थोड़ी सावधानी रखी जाय ।

'ने' के नियम :

- क्रिया सकर्मक होनी चाहिए ।
- क्रिया भूतकाल में होनी चाहिए ।

- ❖ वाक्य में 'ने' कर्ता के साथ संबंध रखता है, कर्म के साथ नहीं ।
- ❖ वाक्य में ने लगने पर 'क्रिया' कर्म के लिंग, वचन के अनुरूप बदलती है ।
- ❖ भूतकाल के वाक्य में कर्मपद न हो तो वैसा वाक्य पुल्लिंग एकवचन में होता है ।

  जैसे : सीता ने खाया । राम ने खाया । गीता ने देखा ।

हिन्दी में इसके प्रयोग की भूलें प्रायः हो जाया करती हैं । 'ने' का प्रयोग केवल हिन्दी और उर्दू में होता है । अहिन्दीभाषियों को 'ने' के प्रयोग में कठिनाई होती है । यहाँ यह देखना है कि हिन्दी भाषा में 'ने' का प्रयोग कहाँ होता है और कहाँ नहीं होता ।

'ने' का प्रयोग कहाँ होता है ?

1. 'ने' का प्रयोग कर्ता के साथ तभी होता है, जब क्रिया सकर्मक तथा सामन्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, हेतु–हेतुमद्भूत और संदिग्ध भूतकालों की और कर्तृवाच्य की हो ।
   सामान्यभूत – राम ने रोटी खायी । आसन्नभूत – राम ने रोटी खायी है ।
   पूर्णभूत – राम ने रोटी खायी थी । संदिग्धभूत – राम ने रोटी खायी होगी ।
   हेतु–हेतुमद्भूत – राम ने पुस्तक पढ़ी होती, तो उत्तर ठीक होता ।
   तात्पर्य यह कि केवल अपूर्णभूत को छोड़ शेष पाँच भूतकालों में 'ने' का प्रयोग होता है।
2. संयुक्त क्रिया के दोनों खण्ड सकर्मक हो, तो अपूर्णभूत को छोड़ शेष सभी भूतकालों में कर्ता के आगे 'ने' चिह्न का प्रयोग होता है । जैसे :
   श्याम ने उत्तर दे **दिया** । किशोर ने खाना **खा लिया** ।
   इन उदाहरणों में काले टाइपवाली संयुक्त क्रियाओं के दोनों खण्ड सकर्मक है ।
3. सामान्यतः अकर्मक क्रिया में 'ने' प्रत्यय नहीं लगता, किन्तु कुछ ऐसी अकर्मक क्रियाएँ हैं– जैसेः नहाना, छींकना, थूकना, खाँसना–जिनमें 'ने' चिह्न का प्रयोग अपवादस्वरूप होता है । इन क्रियाओं के बाद कर्म नहीं आता । जैसे :
   उसने थूका । राम ने छींका । उसने खाँसा उसने नहाया ।
4. जब अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाय तब 'ने' का प्रयोग होता है, अन्यथा नहीं । जैसेः
   उसने टेढ़ी चाल चली । उसने लड़ाई लड़ी ।
5. प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ, अपूर्णभूत को छोड़ शेष सभी भूतकालों में 'ने' का प्रयोग होता है । जैसे :
   मैंने उसे पढ़ाया । उसने एक रुपया दिलवाया ।

'ने' का प्रयोग कहाँ नहीं होता ?

1. सकर्मक क्रियाओं के कर्ता के साथ वर्तमान और भविष्यतकाल में 'ने' का प्रयोग बिलकुल नहीं होता।
2. बकना, भूलना–ये क्रियाएँ सकर्मक हैं, तथापि अपवादस्वरूप सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतकालों में कर्ता के 'ने' चिह्न का व्यवहार नहीं होता ।
   यथा–वह बका, मैं भूला ।
3. यदि संयुक्त क्रिया का अंतिम खण्ड अकर्मक हो, तो उसमें 'ने' का प्रयोग नहीं होता ।
   जैसे: वह पुस्तक **ले आया** । वह **खा चुका** होगा ।
4. जिन वाक्यों में लगना, जाना, सकना तथा चुकना सहायक क्रियाएँ आती हैं उनमें 'ने' का प्रयोग नहीं होता । जैसे :
   वह ले चुका । मैं पानी पीने लगा ।

6} **संदर्भ सूची :**

हिंदी व्याकरण पुस्तक

you tube द्वारा कारक से संबंध में क्लिपिंग दिखा सकते हैं

आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं
आत्मविश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम
सीढ़ी है ।
– स्वामी विवेकानंद

टिप्पणियाँ :

मेजर : भारतीय सेना के अधिकारी । भारतीय सैनिकों के ओहदों की सूची इस प्रकार है ।

कमीशनड रैंक्स :

फील्ड मार्षल
जनरल
लेफ्टिनेंट जनरल
मेजर जनरल
ब्रिगेडियर
कर्नल
लेफ्टिनेंट कर्नल
मेजर
कैप्टन
लेफ्टिनेंट

जूनियर कमीशनड रैंक्स :

सुबेदार मेजर
सुबेदार
नैब सुबेदार

नान कमीशनड रैंक्स :

हवालदार
नायक
लेन्स नायक
सिपाही

ब्रह्म समाज :

ब्रह्म समाज भारत का एक सामाजिक धार्मिक आंदोलन है । जिसने बंगाल के पुनर जागरण युग को प्रभाविर किया । इसके प्रवर्तक राजाराम मोहन राय । अपने समय के विशिष्ट समाज सुधारक थे । 1828 में ब्रह्म समाज को राजाराम मोहनराय और द्वारकानाथ टैगोर ने स्थापित किया था । इसका एक उद्देश्य भिन्न-भिन्न धार्मिक आस्थाओं में बँटी हुई जनता को एक जुट करना तथा समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना है ।

रामकृष्ण मिशन के चित्र :

तक्षशिला :

भारत में दुनिया के पहले विश्वविद्यालय तक्षशिला विश्वविद्यालय की स्थापना सातवीं शती ई.सा पूर्व हो गयी थी । यह समय नालंदा विश्वविद्यालय से लगभग 1200 वर्ष पहले था ।

'तेलपत्त और सुसीमज़ा तक' में तक्षशिला को काशी से 2000 कोस दूर बताया गया है । जातकों में तक्षशिला के महाविद्यालय की भी अनेक बार चर्चा हुई है । यहाँ अध्ययन करने के लिए दूर–दूर से विद्यार्थी आते थे । भारत के ज्ञात इतिहास का यह सर्व प्राचीन विश्वविद्यालय था । इस विश्वविद्यालय में राजा और रंक सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार होता था ।

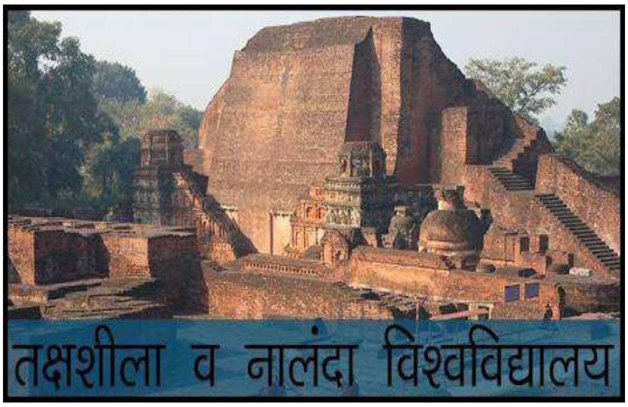

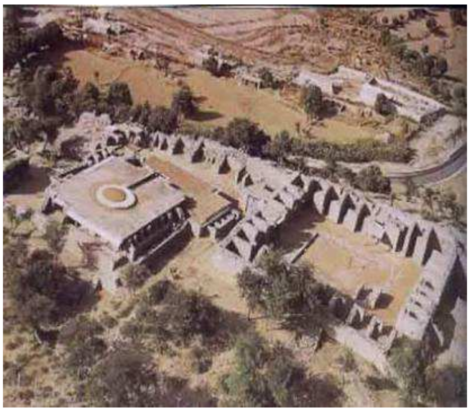

कालिदास का मेघ संदेश :

मेघधूतम महाकवि कालिदास द्वारा रचित विख्यात धूत काव्य है । इसमें एक यक्ष की कथा है । जिसे कुबेर अलकापुरी से निष्काशित कर देता है । निष्काशित यक्ष रामगिरी पर्वत पर निवास करता है । वर्षा ऋतु में उसे अपनी प्रेमिका की याद सताने लगती है । कामार्त यक्ष सोचता है कि किसी भी तरह से उसका अलकापुरी लौटना संभव नहीं है । इसलिए वह प्रेमिका तक अपना संदेश धूत के माध्यम से भेजने का निश्चय करता है । अकेलापन का जीवन गुजार रहे यक्ष को कोई संदेश वाहक भी नहीं मिलता है, इसलिए उसने मेघ के माध्यम से अपना संदेश विरहाकुल प्रेमिका तक भेजने की बात सोची । इस प्रकार आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश पर उमडते मेघों ने कालिदास की कल्पना के साथ मिलकर एक अनन्य कृति की रचना कर दी । वही मेघधूत है ।

हिमालय की बेटियाँ :

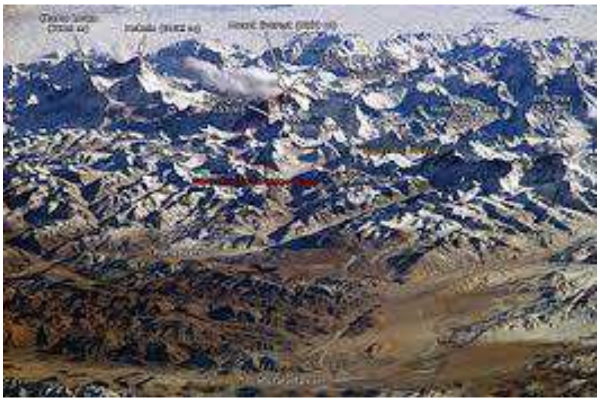

इंटरनेट क्रांति : सोशल नेटवर्किंग साइट्स :

भाषाई कौशल

भाषाई कौशल : अर्थ, उद्देश्य और प्रकार :

किसी कार्य को करने में दो प्रकार की योग्यता अपेक्षित होती है – सामान्य तथा विशेष परंतु बहुत से कार्य विशेष अभ्यास तथा परिश्रम की माँग करते हैं । इसी अभ्यास तथा परिश्रम से व्यक्ति उस कार्य को संपन्न करने की विशेष क्षमता अर्जित कर लेता है । यही क्षमता 'कौशल' कहलाती है ।

भाषाई कौशल का अर्थ भाषाई व्यवहार में कुशलता प्राप्त करना है । कुशलता का विकास व्यवस्थित भाषा शिक्षण के माध्यम से किया जा सकता है । ऐसे तो व्यवस्थित भाषा शिक्षण के बिना भी भाषाई व्यवहार संपन्न किया जा सकता है परंतु इस कार्य को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए भाषाई कुशलताओं का विकास आवश्यक है ।

भाषाई संप्रेषण के दो रूप हैं – मौखिक और लिखित । संप्रेषण में भाषा का मौखिक रूप ही प्रमुख है । प्रथम भाषा शिक्षण में मुख्यतः भाषा के लिखित रूप पर विशेष बल दिया जाता है । परंतु द्वितीय एवं तृतीय भाषा शिक्षण में भाषा के मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों पर बल दिया जाता है । सुनना (श्रवण), बोलना(भाषण), पढ़ना(पठन) तथा लिखना(लेखन) भाषा के चार कौशल माने जाते हैं । शिक्षार्थी को इन कौशलों में निपुणता प्रदान करना तथा उसके उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है ।

श्रवण कौशल (सुनना) :

श्रवण कौशल को भाषाई कौशलों का पहला सोपान माना जाता है । डॉ. किशोरीलाल शर्मा जी के अनुसार – 'श्रवण कौशल में केवल ध्वनि श्रवण का ही समावेश नहीं होता अपितु जो कुछ हम सुनते हैं, उसे पहचानते हैं, समझते हैं और अर्थ ग्रहण करके उसे स्मरण रखते हैं । इसी प्रकार किसी भाषण को ग्रहण करने की प्रक्रिया को निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता अपितु यह एक सक्रिय तथा सोद्देश्य है ।

श्रवण शब्द श्रो धातु से बना है । जिसका संबंध सुनने की क्रिया, ध्यान पूर्वक सुनना, अध्ययन करना, अधिगमन करना, मौखिक संवाद आदि से है । श्रवण अंग्रेजी के (Listening) का पर्याय है जिसका अर्थ है – अर्थ निर्णय या अर्थ निष्पादन की प्रक्रिया । अंग्रेजी शब्द hearing का अर्थ किसी ध्वनि का कान तक पहुँचना मात्र है, जब कि listening को A process of interpretation अर्थात अर्थ निर्णय या अर्थ निष्पादन की प्रक्रिया कहा गया है ।

श्रवण शिक्षण की प्रविधियाँ :

छात्रों में श्रवण कौशल विकसित करने के लिए अध्यापक निम्नलिखिए प्रविधियों, सामग्रियों, क्रियाओं एवं उपकरणों की सहायता ले सकता है –

1) **सस्वर पठन** : छात्र अध्यापक द्वारा किये गये आदर्श पठन तथा योग्य छात्र द्वारा किये गये पठन को ध्यान पूर्वक सुनकर शुद्ध उच्चारण बलाघात, गति आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

2) **प्रश्नोत्तर** : अध्यापक को छात्रों से व्यावहारिक बातों एवं पठित सामग्रि पर प्रश्न पूछने चाहिए । छात्रों के उत्तर से यह जाँच हो जाएगी कि छात्र सुनकर विषय वस्तु को ग्रहण कर रहे हैं या नहीं । अध्यापक द्वारा प्रश्न पूछे जाने से छात्र भी सावधान हो जएँगे और कक्षा में अध्यापक की बात ध्यान पूर्वक सुनेंगे ।

3) **कहानी सुनना और सुनाना** : पहले अध्यापक छात्रों को कहानी सुनाए और बाद में उसी कहानी को छात्रों से सुने । कहानी सुनने में छात्रों की रुचि होती है अतः कहानी के द्वारा छात्रों का ध्यान सुनने की तरफ आकर्षित किया जा सकता है ।

4) **श्रुत लेख** : श्रुत लेख लेखन कौशल को विकसित करने का साधन है परंतु इसकी सहायता से श्रवण को भी विकसित किया जाता है । इसमें सुनकर लिखना होता है । जो छात्र ध्यान से नहीं सुनेगा उसके लेख में बीच–बीच में शब्द या वाक्यांश छूट जएँगे ।

5) **दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग** : श्रवण कौशल को समूह माध्यमों द्वारा भी विकसित किया जा सकता है । जैसे : रेडियो, टेपरिकार्डर, दूरदर्शन, वीडियो , मोबाइल और कंप्यूटरों में मिलनेवाले तरह–तरह के उपयोगि शैक्षिक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों को सुना सकते हैं ।

भाषण कौशल (बोलना) :

भाषण कौशल का अर्थ बोलने का कौशल । जब व्यकि मौखिक रूप से अपनी बात को कहने में समर्थ हो जाता है तो उसे मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल माना जाता है । मौखिक अर्थात मुख से निकला हुआ । 'बोलना' अभिव्यक्ति अर्थात स्वयं को अभिव्यक्त करना । इस प्रकार किसी विषय पर मौखिक रूप से प्रस्तुत करना ही मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है ।

डॉ. उमा मंगल ने मौखिक अभिव्यक्ति को स्पष्ट किया है –'जब व्यक्ति ध्वनियों के माध्यम से, मुख के अवयवों की सहायता से उच्चरित भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को प्रकट करता है तब उसे मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है ।

भाषण शिक्षण की प्रविधियाँ :

छात्रों में बोलना कौशल विकसित करने के लिए अध्यापक निम्नलिखित प्रविधियों, सामग्रियों, क्रियाओं एवं उपकरणों की सहायता ले सकता है –

1) **वार्तालाप** : अध्यापक को पाठ्य विषय पढ़ाते समय पारिवारिक वातावरण की घटनाएँ, विद्यालय में होनेवाली घटनाएँ, यात्रा वर्णन, समाचार पत्रों में पढ़ी हुई प्रमुख घटानाएँ, पठित पुस्तकों से रोचक प्रसंगों को लेकर वार्तालाप कराके छात्रों में भाषण कौशल को विकसित कर सकता है ।

   प्रत्येक छात्रों को वार्तालाप में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना होता है।

2) **कहानी :** माध्यमिक स्तर पर कहानी कहना और कहलाना मौखिक अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है । पर ये कहानियाँ सरल, संक्षिप्त और मनोरंजक हो । 15–20 मिनट की कहानी हो तथा उसे अनेक प्रकार से कहलाया जा सके ।

   जैसे : क) कहानी का आरंभ बताकर छात्रों से शेष कहानी कहलाना ।

   ख) कहानी का अंतिम भाग कहकर उसका पूर्वांश कहलाना ।

   ग) संकेत रूप में कुछ वाक्य या रूपरेखा देकर कहानी कहलाना ।

   घ) माध्यमिक कक्षाओं में मौखिक कहानी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जा सकती है।

3) **कविता वाचन :** इस स्तर पर पठन एवं कविता पाठ मौखिक अभिव्यक्ति के प्रधान अंग हैं । सस्वर पठन से उच्चारण की शुद्धता, ध्वनि का आरोह–अवरोह, गति, विराम, प्रवाह आदि का अभ्यास होता है । जो मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक गुण है । कक्षा नौ और दस तक आते–आते छात्रों को अनेक कविताएँ कंठस्थ हो जाती हैं ।

4) **भाषण :** भाषण का प्रारंभ माध्यमिक कक्षाओं से किया जाना चाहिए । कारण भाषण में वक्तृत्व कला को जानने की आवश्यकता होती है । जैसे : निर्भीकता, आत्मविश्वास, विषय का ज्ञान, उपस्थित श्रोताओं को उचित रीति से संबोधन, हाव भाव आदि ।

5) **वाद विवाद :** इसमें छात्र पूर्व निर्धारित विषयों पर विचारों का आदाना–प्रदान करते हैं । यह विधि उच्च्य कक्षाओं के लिए अपनाई जाती है । इसमें प्रतिपक्षी वक्ता या वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत तर्कों के खंडन के लिए उसे तत्काल उचित विचारों को सोचना, उचित भाषा का प्रयोग करना पड़ता है ।

6) **अभिनय या नाटक :** अभिनय सामाजिक मनोविनोद तथा मौखिक अभिव्यक्ति दोनों का सुंदर माध्यम है ।अभिनय के लिए संक्षिप्त नाटक एकांकी और प्रहसन अधिक उपयोगी

सिद्ध होते हैं । पाठ्य पुस्तक में दिये गये नाटकीय पाठों तथा कहानियों पर भी नाटक आयोजित किया जा सकता है ।

7) **समाचार पठन :** उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सप्ताह में एक दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रमुख घटनाओं का उल्लेख करते हुए अपने विचार प्रकट कर सकते हैं । इससे समाचार पत्र पढ़ने की रुचि भी विकसित होगी । तथा समाचार को संक्षेप में कहने के प्रयत्न से भाषा पर उनका अधिकार भी बढ़ेगा ।

वाचन (पढ़ना) :

सामान्यत पढ़ना कौशल का अर्थ भाषा की लिपि को पहचान कर उच्चारित करना तथा अर्थ ग्रहण करना है । 'पढ़ना' कौशल के महत्व को स्वीकार करते हुए भाषा विद्वानों ने उसे मनोवैज्ञानिक पक्ष से जोड़ने का प्रयास किया है ।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में छात्र इससे पूर्व श्रवण तथा मौखिक अभिव्यक्ति से परिचित हो चुका होता है । इस कौशल के अंतर्गत सुनी हुई ध्वनि को छपे हुए लिपि प्रतीकों के साथ संबंध स्थापित कर सस्वर अथवा मौन रूप से पढ़ते हुए उसमें निहित भावों विचारों को ग्रहण करना सीखता है ।

'पढ़ना' कौशल के चार सोपान माने जाते हैं –

1) **पहचान** – छात्र लिपि–प्रतीकों को पहचानता है अर्थात लिपि संकेतों को सांकेतिक ध्वनियों के साथ जोड़ता है । इस ध्वनि संकेतों से घटित शब्दों वाक्यांशों तथा वाक्यों को पहचानता है ।
2) **अर्थ ग्रहण** – लिपि संकेतों द्वारा बने शब्दों, वाक्यों में निहित अर्थ को संदर्भानुसार समझाना है । इसमें विभिन्न प्रकार के अर्थ ग्रहण करना सिखाया जाता है । जैसे – कोशीय अर्थ, व्याकरणिक अर्थ, वाक्यगत अर्थ, सांस्कृतिक अर्थ ।
3) **मूल्यांकन** – यह सोपान उच्चस्तरीय है, जिसमें पाठक ग्रहण किये गये विचारों की उपयोगिता, सार्थकता, विश्वसनीयता विचार या मूल्यांकन करता है ।
4) **अनुप्रयोग** – पढ़ना कौशल का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब पाठक (छात्र) पुस्तक अथवा रचना को पढ़कर अपने व्यवहार, विचार तथा जीवन मूल्यों में परिष्कार लाए ।

पढ़ना कौशल के प्रकार :-

1) सस्वर वाचन
2) मौन वाचन

पढ़ना कौशल शिक्षण की प्रविधियाँ :

छात्रों में पढ़ना कौशल विकसित करने के लिए अध्यापक निम्नलिखिए प्रविधियों, सामग्रियों, क्रियाओं एवं उपकरणों की सहायता ले सकता है –

1) **वाक्य विधि** : इस विधि में चार्ट पर लिखा हुआ वाक्य छात्रों के सामने प्रस्तुत किया जाता है और अध्यापक उन वाक्यों को आवाज के साथ पढ़ता है । बच्चे अध्यापक का अनुसरण करते हुए वाक्यों का उच्चारण करते हैं । बार–बार वाक्यों को पढ़ते हुए छात्र उसके शब्दों से परिचित हो जाते हैं ।
2) **कहानी विधि** : छात्रों को कहानी में अधिक रुचि होती है । अतः इस विधि में छोटे–छोटे वाक्यों की एक कहानी चार्ट और चित्रों के माध्यम से छात्रों के सामने प्रस्तुत की जाती है । अध्यापक चार्ट या चित्र दिखाते हुए चित्र के नीचे लिखे हुए वाक्यों को पढ़ते हैं और छात्र उनका अनुसरण कर उन वाक्यों का उच्चारण करते हैं ।
3) **कविता विधि** : बच्चों की संगीत में स्वाभाविक रुचि होती है उसी को ध्यान में रखते हुए इस विधि का विकास किया गया है । इसकी शिक्षण प्रक्रिया कहानी विधि जैसी ही है । कहानी के स्थान पर सरल शब्दोंवाली कविता होती है । छात्रों से कविता का गायन कराया जाता है । इससे धीरे–धीरे छात्रों को वर्णों और शब्दों की पहचान होने लगती है ।
4) **साहचर्य विधि :** इस विधि में कक्षा–कक्ष की दीवार पर चित्र टाँग दिये जाते हैं । इन चित्रों में शब्द और वर्ण भी लिखे हुए होते हैं । छात्र दीवार पर चित्र के वर्ण अथवा शब्द का कार्ड छाँट कर निकालते हैं और अध्यापक उनका उच्चारण कर, छात्रों को इनसे पहचान कराता है । धीरे–धीरे चित्र, कार्ड और उच्चारण में साहचर्य स्थापित होता है और छात्रों को वर्णों और शब्दों का ज़ान होता जाता है । छात्र खेल–खेल में सक्रिय होकर पठन करना सीख जाते ।
5) **संयुक्त विधि :** संयुक्त विधि का अर्थ है सभी विधियों के गुणों का लाभ उठाना । अतः सभी विधियों की अच्छाइयों को ग्रहण कर उनका मिश्रित रूप से प्रयोग कर पठन शिक्षण को रुचि कर बनाने का प्रयास करना चाहिए ।

लेखन कौशल (लिखना) :

मौखिक भाषा की ध्वनियों को जिन विशिष्ट चिह्नों द्वारा लिखित रूप में व्यक्त करते हैं । उसे लिपि कहते हैं । लिपि के ज्ञान से ही भाषा के मौखिक रूप को लिखित रूप में बदला जा सकता है । भाषा विशेष में स्वीकृत लिपि प्रतीकों के माध्यम से भावों–विचारों को अंकित करने की कुशलता को लेखन कौशल कहा जाता है । अन्य कौशलों के माध्यम से अर्जित कुशलताएँ लेखन कौशल के विकास में पर्याप्त सहयोग देती हैं और लेखन के विकास में अन्य कौशलों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से दृढ़ीकरण हो जाता है ।

लेखन कौशल में तीन बातों का समावेश होता है ।

1) वर्ण – वर्णमाला के प्रत्येक वर्णों को ठीक प्रकार से रूप प्रदान करने की योग्यता ।
2) वर्तनी – वर्ण संयोजक के प्रयोग का समुचित ज्ञान और रचना ।
3) रचना – लिखित शब्द प्रतीकों या रचना द्वारा आत्माभिव्यक्ति की क्षमता । रचना शिक्षण से अभिप्राय है, विचारों को लिपिबद्ध रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना । वस्तुतः रचना विचारों की स्पष्ट और क्रमबद्ध अभिव्यक्ति है । प्रत्येक वाक्यों की रचना करना लेखन की पहली सीढ़ी है । रचना लेखन का प्रारंभ परिचित शब्दावली और नियंत्रित वाक्य रचनाओं से किया जाता है और धीरे–धीरे रचना के उच्चस्तर की ओर बढ़ा जाता है ।

विषय की दृष्टी से रचना के दो अंग है -

अ) नियंत्रित रचना

आ) मुक्त रचना

अ) **नियंत्रित रचना** : इस प्रकार के रचनाओं में अध्यापक द्वारा आधार बिंदुओं का निर्धारण होता है । यह दो नियमों से प्रतिबंधित होता है । 1) भाषा संबंधी नियम – शब्द, वाक्य, अनुच्छेद, विराम चिह्नों आदि का नियम ।

3) विषय संबंधी नियम – इसमें सुनिश्चित प्रणाली एवं क्रिया विधि का अनुसरण करना होता है जैसे : व्यावहारिक पत्र, अधिकारियों को प्रार्थना पत्र, संपादक को समाचार भेजना, सभा समारोह के रिपोर्ट, बैंक और डाक घर से संबंधित पत्र

आ) मुक्त रचना : इस प्रकार की रचना में भाषा संबंधी नियमों को पालन करते हुए भावाभिव्यक्ति की दृष्टी से स्वेच्छानुसार शब्दों को चुनकर संयोजित करने की स्वतंत्रता लेखक को प्राप्त होती है । इस प्रकार की रचना के दो उद्देश्य हैं 1) अपने विचारों को

अपनी शैली में क्रमबद्ध सुसज्जित करना । 2) अपने मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मनोनुकूल शब्द चयन की योग्यता एवं सामर्थ्य प्रदान करना ।

माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर निम्न लिखित कार्य कराया जा सकता है ।

- संवाद, पठित महापुरुषों की जीवनी, अनुभव पर आधारित यात्रा, प्रकृति वर्णन, दृश्य वर्णन, घटना वर्णन । देखे, सुने, बातचीत पर आधारित विषय जैसे गाँव, बाजार, विद्यालय का वर्णन ।

  जीवनी, आत्मकथा, सार लेखन, विचार विस्तार, सृजनात्मक रचनाएँ आदि ।

लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ –

लेखन शिक्षण की अनेक प्रविधियाँ हैं । छात्रों की रुचि, मानसिक योग्यता, भाषा शक्ति को देखते हुए विषय या प्रकरण के अनुकूल उचित विधि का अनुसरण अपेक्षित है । उदाहरणतः प्रश्नोत्तर एवं चित्र वर्णन प्रारंभिक स्तर पर अधिक सिद्ध होते हैं तो रूपरेखा विधि, स्वाध्याय विधि, सूत्र विधि आदि उच्च कक्षओं के लिए उपयुक्त है ।

1) **रूपरेखा विधि** : एक सुनिश्चित रूपरेखा अथवा संकेत सूत्र देकर छात्रों को निबंध लिखने के लिए कहा जाता है । जो विषय छात्रों की ज़ान परिधि के बाहर है उन पर रचना कार्य कराने के लिए यह विधि उपयोगी है क्योंकि रूपरेखा अथवा संकेत सूत्रों द्वारा वे विषय सामग्री से परिचित हो जाते हैं ।
2) **तर्क अथवा परिचर्चा विधि** : विवादास्पद विषयों पर जिनके पक्ष–विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं । रचना कार्य कराने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है । किसी एक विषय के संबंध में छात्रों के बीच में वाद–विवाद अथवा मौखिक विचार विमर्श और तर्क वितर्क से विषय से संबंधित पर्याप्त सामाग्री एकत्र हो जाती है । तत्पश्चात छात्र अध्यापक के निर्देशन में उपयुक्त एवं संगत पूर्व सामग्री के आधार पर निबंध लिखते हैं ।
3) **आदर्श अनुकरण :** किसी विशेष शैली में लिखित रचना को देखकर उसके अनुकरण के आधार पर रचना कार्य करना ।
4) **स्वाध्याय अथवा मंत्रणा प्राविधि :** इस विधि में रचना की विषय सामग्री पुस्तकों तथा पत्र पत्रिकाओं से ढूँढने तथा चयन करने के लिए कहा जाता है । अध्यापक छात्रों को पुस्तकों तथा पत्र पत्रिकाओं के नाम बताते है । छात्र विषय सामग्री स्वयं अध्ययन से ढूँढता है और उस आधार पर निबंध या रचना लिखता है । इससे स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित होती है ।

रचनात्मक कार्य – भाषा कौशल

सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखने से संबंधित कार्य कलापों के मूल्यांकन के लिए इस तालिका में दिये गये आधारबिंदु सहायक होंगे ।

सुनना कौशल :

- ध्वनियों की पहचान ।
- समान ध्वनियों का पारस्परिक अंतर समझना । (जैसेः श, ष, स)
- ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर का अंतर समझना ।
- सुर के आरोह–अवरोह को पहचानना ।
- बलाघात, स्वराघात ध्वनियों को पहचानना ।
- वक्ता की आंगिक चेष्टाओं के अनुसार भाव या अर्थ ग्रहण करना ।
- शब्दों के वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ को समझना ।
- कहावतें, मुहावरें एवं लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझना ।
- श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण विचारों, भावों, नामों तथा तथ्यों का चयन करना ।
- अलंकारिक सौंदर्य के अनुसार भावग्रहण करना ।
- उच्चारित ध्वनियों के अशुद्ध रूप तथा त्रुटियों को पहचानकर शुद्ध रूप का निर्धारण करना ।
- वाद–विवाद के पक्ष एवं विपक्ष के विचारों को तटस्थ सुनकर उनकी तुलना करके अपना मत व्यक्त करना ।
- चर्चा अथवा भाषण के अंतर्गत मन में उठनेवाली शंकाओं के संबंध में प्रश्न पूछना ।
- ग्रहण शक्ति ।

बोलना कौशल :

- बोलने में रुचि
- शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण ।
- अर्थानुकूल उचित आरोह–अवरोह सहित बोलना ।
- बलाघात पर ध्यान ।
- बोलने में निरंतर प्रवाह पर ध्यान ।
- स्थानीय बोलियों/भाषाओं के प्रभाव से मुक्त होकर स्वाभाविक भाषा का प्रयोग ।
- प्रसंगानुकूल शब्दों, मुहावरों का संगत प्रयोग ।
- विषय और अवसर के अनुकूल भाषा का प्रयोग ।

- लय और भाव के साथ कविता पाठ करना ।
- श्रोताओं की प्रतिक्रिया समझकर उसके अनुरूप विषयवस्तु, भाषा और शैली में परिवर्तन लाना ।
- घटना या वस्तु को चित्रात्मक भाषा में वर्णन करना ।
- शब्दों की पुनरावृत्ति पर नियंत्रण करना ।
- सरल घटनाओं का वर्णन करते हुए श्रोताओं के प्रश्नों को उत्तर देना ।
- उचित आंगिक भाषा पर ध्यान ।

पढ़ना कौशल :

- शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण ।
- लेखन चिह्नों पर ध्यान देना ।
- भाव के साथ वाचन करना ।
- स्वरों के आरोह–अवरोह पर ध्यान देना ।
- प्राणत्व के बारे में जानता है । (अल्प, महा)
- उचित गति से पढ़ना ।
- राग–ताल का मेल–जोल करता है–गेयशैली । (कविता में)
- वर्तनी की ओर ध्यान ।
- मुखाकृति/मुखसुख ।
- अभिव्यक्ति ।
- ध्वनि ।
- आकर्षण शैली । (दूसरों को आकर्षण करने की शक्ति)
- उचित आंगिक भाषा का प्रयोग । (कहानी, एकांकी, नाटक वाचन के समय)
- आत्मसाथ करने की क्षमता । (वाक्यांश और भाव में साम्यता)
- व्याकरण पर ध्यान ।
- समय पालन ।
- श्रोताओं की संख्या तथा स्थान का ध्यान में रखकर वाचन करना ।
- अर्थ समझकर पढ़ना ।
- सुगमता से वाचन करना ।

लिखना कौशल :

- लिखावट– सुडौल, सुंदर, स्पष्ट ।
- सही वर्तनी ।
- विरामादि चिह्नों पर ध्यान । (लेखन चिह्न)
- ध्वनि चिह्नों को लिखने के तरीके ।
- दोष रहित श्रुतलेख ।
- समय पर ध्यान ।
- लिखने में एकाग्रता ।
- नये शब्दों को पहचानने की शक्ति ।
- संयुक्ताक्षर/बारहखड़ी सहित शब्दों को ठीक लिखने की क्षमता ।
- हलंत युक्त ध्वनियों को लिखने की क्षमता ।(मध्य, अंत, बिना खड़ीपाई के अक्षरों में)
- समान शब्दों को समझकर लिखने की क्षमता । (बिंदु और चंद्रबिंदु का प्रयोग)
- उच्चारित ध्वनियों का शुद्ध और अशुद्ध को पहचानना तथा शुद्ध रूप लिखने की क्षमता ।
- व्याकरणिक शुद्ध भाषा का प्रयोग ।
- सार लेख लिखना ।
- वाक्यों को क्रमबद्धता से लिखना ।
- शीर्षक के अनुसार विचार ।
- लिखने में क्रमबद्धता ।
- उपयुक्त शब्द भंडार ।
- भाषा का प्रयोग ।

भाषाई कौशलों से संबंधित रचनात्मक कार्य करते समय निम्न लिखित क्रिया–कलापों के लिए आधार बिंदु लगाने के बारे में जानकारी दी गयी है ।

भावपूर्ण वाचन

- शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण ।
- लेखन चिह्नों पर ध्यान देना ।
- भाव के साथ वाचन करना ।
- स्वरों के आरोह–अवरोह पर ध्यान देना ।
- प्राणत्व के बारे में जानता है । (अल्प, महा)
- उचित गति से पढ़ना ।
- राग–ताल का मेल–जोल करता है–गेयशैली । (कविता में)
- वर्तनी की ओर ध्यान ।
- मुखाकृति/मुखसुख ।
- अभिव्यक्ति ।
- ध्वनि ।
- आकर्षण शैली । (दूसरों को आकर्षण करने की शक्ति)
- उचित आंगिक भाषा का प्रयोग । (कहानी, एकांकी, नाटक वाचन के समय)
- आत्मसाथ करने की क्षमता । (वाक्यांश और भाव में साम्यता)
- व्याकरण पर ध्यान ।
- समय पालन ।
- श्रोताओं की संख्या तथा स्थान का ध्यान में रखकर वाचन करना ।
- अर्थ समझकर पढ़ना ।
- सुगमता से वाचन करना ।

श्रुत लेख
सुलेख

- ➢ ध्वनियों की पहचान ।
- ➢ लिखावट– सुडौल, सुंदर, स्पष्ट ।
- ➢ वर्तनी ।

- विरामादि चिह्नों पर ध्यान । (लेखन चिह्न)
- ध्वनि चिह्नों को लिखने के तरीके ।
- दोष रहित श्रुतलेख ।
- समय पर ध्यान ।
- सुनने, लिखने में एकाग्रता ।
- नये शब्दों को पहचानने की शक्ति ।
- संयुक्ताक्षर/बारहखड़ी सहित शब्दों को ठीक लिखने की क्षमता ।
- ग्रहण शक्ति ।
- हलंत युक्त ध्वनियों को लिखने की क्षमता ।(मध्य, अंत, बिना खड़ीपाई के अक्षरों में)
- समान शब्दों को समझकर लिखने की क्षमता । (बिंदु और चंद्रबिंदु का प्रयोग)
- उच्चारित ध्वनियों का शुद्ध और अशुद्ध को पहचानना तथा शुद्ध रूप लिखने की क्षमता ।

योजना कार्य

उपर्युक्त अंशों के साथ:-

- शीर्षक के अनुसार विचार हो ।
- लिखने में क्रमबद्धता ।
- उपयुक्त शब्द भंडार ।
- भाषा का प्रयोग ।

कूट प्रश्न

- प्रश्नों की तालिका ।
- एक ही स्पष्ट उत्तर के प्रश्न हो ।
- प्रश्न सरल हो ।
- प्रश्न/उत्तर के उच्चारण में शुद्धता ।
- वैयक्तिक/सामूहिक रूप में कूट प्रश्न करने के लिए तैयारी ।
- हाँ/नहीं जैसे प्रश्न न हो ।
- नकारात्मक उत्तर के प्रश्न न हो ।
- पाठ से संबंधित प्रश्न ही हो ।

- हर एक के लिए बोलने का अवसर दे ।
- भाषा अलंकारिक न होकर सरल हो ।
- छात्रों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर शब्दों का चयन ।
- स्थानीय भाषा/ध्वनियों का प्रयोग न हो ।

समाचार पत्र पढ़ना

- शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण ।
- लेखन चिह्नों पर ध्यान देना ।
- स्वरों के आरोह–अवरोह पर ध्यान देना ।
- प्राणत्व के बारे में जानता है । (अल्प, महा)
- उचित गति से वाचन ।
- वर्तनी की ओर ध्यान ।
- अभिव्यक्ति ।
- ध्वनि ।
- आकर्षण शैली । (दूसरों को आकर्षण करने की शक्ति)
- आत्मसाथ करने की क्षमता । (वाक्यांश और भाव में साम्यता)
- व्याकरण पर ध्यान ।
- समय पालन ।
- श्रोताओं की संख्या तथा स्थान का ध्यान में रखकर वाचन करना ।
- अर्थ समझकर पढ़ना ।
- सुगमता से वाचन करना ।

सहायक सामग्री

भाषा एवं वैकल्पिक विषयों की अध्यापन प्रक्रिया में क्रमबद्ध ज्ञान की रचना छात्रों में होना चाहिए । ज्ञान को शाश्वत रूप से अपनाने के लिए क्रिया–कलापों की नितांत आवश्यकता होती है । क्रिया–कलाप रहित अधिगम प्रक्रिया सारहीन है । कक्षा में देखकर, सुनकर और अनुभव करके सीखनेवाले छात्र होते हैं । इस तरह के छात्रों को सिखाते समय सांप्रदायिक पद्धतियों द्वारा सिखाना रोचक नहीं बनता ।

"अधिगम प्रक्रिया में छात्रों को प्रेरित करने, ज्ञान को दृढ़ीकरण अथवा मूल्यांकन को प्रभावित करनेवाली विषयवस्तु ही सहायक सामग्री है ।" अधिगम प्रक्रिया में वस्तु रूप के सामाग्री का उपयोग करना ही नहीं कल्पित घटनाएँ, संवाद, गायन जैसे सभी विचार भी सहायक सामग्री के अंतर्गत आते हैं ।

शिक्षकों को पाठ्य पुस्तक को ही सर्वस्व नहीं मानना चाहिए । क्योंकि सिखाते समय छात्रों को दिये जानेवाले अनुभव केवल पाठ्य पुस्तक द्वारा साध्य नहीं हो सकते हैं । पाठ्य पुस्तक में निहित अंशों की जानकारी देना शिक्षण प्रक्रिया नहीं कहलाती । छात्र जो सीख लेते हैं उसका अनुभव कर लेने पर ही परिपूर्ण होता है । विचारों को अनुभव कर सीखने में सहायक सामग्रियों की आवश्यकता है । इन सामग्रियों के लक्षण निम्न रूप से देख सकते हैं ।

- सहायक सामग्री प्रदर्शन के लिए न होकर उपयुक्त हो और कक्षा में उनका प्रयोग होनी चाहिए ।
- ये कक्षा के अनुरूप व स्थानीय लभ्य सामग्रियों से रचित होनी चाहिए ।
- अनुभव बढ़ाने में सहायक होना चाहिए ।
- अमूर्त कल्पनाओं के लिए स्पष्ट कल्पना देने हेतु सहायक होनी चाहिए ।
- सीखने में रोचकता लानी चाहिए ।
- सामग्री अनेक क्षमताओं को सिखाने में मदद देनी चाहिए ।
- कम खर्च में रचित उपयुक्त सामग्री होनी चाहिए ।
- गुणवत्ता और परिमाणात्मक होकर सभी छात्रों को समयानुसार मिलना चाहिए ।
- दीर्घ समय तक रहनेवाली सामग्री का निर्माण होना चाहिए ।
- समस्या पूर्ति के उद्देश्य से निर्मित होने चाहिए ।
- कालानुसार, विषय वस्तु के अनुसार सामग्री होनी चाहिए ।

अपठित गद्यांश

अर्थ और उद्देश्य :

पठित अथवा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देना अपेक्षतया सरल होता है । पर परीक्षार्थी के बौद्धिक विकास, मानसिक क्षमता और सामान्य ज्ञान की परीक्षा वस्तुतः अपठित के द्वारा होती है । पठित का क्षेत्र सीमित और निश्चित होता है; अपठित का क्षेत्र व्यापक और अनिश्चित । ये अवतरण प्रायः समाचारपत्रों, सामान्य ज्ञान की पुस्तकों और हिन्दी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं से लिये जाते हैं । 'अपठित' का अर्थ है, वह पाठ या संदर्भ, जो छात्र की आँखों के सामने पहले न गुजरा हो । ऐसे गद्यांशों के मूल भावों को समझने में परीक्षार्थियों को बुद्धिबल से काम लेना पड़ता है । यह एक प्रकार का मानसिक व्यायाम है । लेकिन, यह कोई कठिन कार्य नहीं है । थोड़ी सावधानी और धैर्य से काम लेने पर सारे प्रश्नों के उत्तर निकल आते हैं, क्योंकि सभी प्रश्नों के उत्तर उसी गद्यांश में रहते हैं ।

अपठित गद्यांश को समझना और उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दे सकना एक प्रकार से जीवन की वास्तविक समस्याओं के समाधान ढूँढ सकने की क्षमता का अभ्यास करना है । हिन्दी अपठित में सफलता पाने के लिए हिन्दी भाषा और साहित्य का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है । साथ ही धैर्य और अध्यवसाय भी उतना ही अपेक्षित है ।

सामान्य निर्देश :

अपठित अवतरणों से संबद्ध प्रश्नों के उत्तर देने में निम्नलिखित कुछ सामान्य नियम सहायक सिद्ध होंगे –

- मूल अवतरण को कम–से–कम तीन बार पढ़ना चाहिए । यदि इससे मूल भाव स्पष्ट न हो, तो उसे एक–दो बार और पढ़ना चाहिए ।
- मूल भावो, विचारों तथा शब्दों को रेखांकित करना चाहिए ।
- एक–एक प्रश्न का उत्तर मूल अवतरण में ही ढूँढना चाहिए, बाहर नहीं ।
- प्रश्नोत्तर लिखते समय मूल में दिये गये शब्दों का ही यथासंभव प्रयोग करना चाहिए ।
- यह बात याद रखनी चाहिए कि सभी प्रश्नों के उत्तर सरल और संक्षिप्त हो ।
- प्रश्नोत्तर लिखते समय अपनी ओर से बढ़ा–चढ़ाकर लिखना या अतिरिक्त उदाहरण देना नहीं चाहिए ।
- सभी प्रश्नोत्तर प्रसंगानुकूल होने चाहिए । अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए । प्रश्न जितना किया गया है, उत्तर उतना ही होना चाहिए ।
- प्रश्नकर्ता के निर्देशानुसार ही परीक्षार्थी को अपना मत या विचार व्यक्त करना चाहिए, अन्यथा नहीं ।

अनुवाद

अर्थ : एक भाषा में कही या लिखी गई बात को दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन करना ही अनुवाद कहलाता है। संस्कृत के 'वद्' धातु से अनुवाद शब्द का निर्माण हुआ है। वद् का अर्थ है बोलना, वद् धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रुप हे 'वाद' जिसका अर्थ है क्रिया या कही हुई बात । वाद में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुनः कहना । इस प्रकार अनुवाद शब्द का प्रयोग एक भाषा में प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया । अंग्रेजी में इसके लिए TRANSLATION शब्द प्रचलित है।

अनुवाद के लिए 'भाषांतर' और 'रुपांतर' शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है । किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत प्रस्तुत करना अनुवाद है । इस विशेष अर्थ में ही अनुवाद शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है । जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, वह मूल या स्रोत भाषा कहलाती है । उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है, वह प्रस्तुत या लक्ष्य भाषा कहलाती है । इस तरह स्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है ।

अनुवाद के प्रकार –

1.शब्दानुवाद : स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्य भाषा के प्रत्येक शब्द में यथावत अनुवाद को शब्दानुवाद कहते हैं ।

2.भावानुवाद : स्रोत भाषा के शब्द, पदक्रम और वाक्य–विन्यास पर ध्यान न देकर मूल भाषा की विचार सामग्री या भावधारा को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना ही भावानुवाद है।

3.छायानुवाद : इसमें न शब्दानुवाद की तरह केवल मूल शब्दों का अनुसरण होता है और न ही सिर्फ भावानुवाद की तरह भावों का अनुसरण, बल्कि मूल भाषा से पूरी तरह बंधा हुआ उसकी छाया में लक्ष्य भाषा में वर्ण्य विषय की प्रस्तुति होती है ।

4.सारानुवाद : इस अनुवाद में मूल भाषा की सामग्री का संक्षिप्त और अति संक्षिप्त अनुवाद लक्ष्य भाषा में किया जाता है ।

5.व्याख्यानुवाद : इसमें मूल भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में व्याख्या सहित उपस्थित किया जाता है ।

6.आशु अनुवाद : दो भिन्न भाषा–भाषी जब आपस में बातें करते हैं तो उनके बीच एक व्यक्ति दुभाषिया संवाद का माध्यम बनता है, इस अवसर को आशु अनुवाद कहा जाता है ।

कक्षानुरुप व्याकरण

कक्षा :– 8 वीं

वर्ण (स्वर, व्यंजन, योग वाहक और अनुनासिक)

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कारक – का संक्षिप्त परिचय

सरल शब्दों का वचन, लिंग, विलोम, समानार्थक, शब्द विच्छेद – का संक्षिप्त परिचय

कक्षा :– 9 वीं

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया–विशेषण, वचन, लिंग, कारक, विलोम, संधि, वाक्य, काल, प्रेरणार्थक क्रियारुप, उपसर्ग, नुक्ता और उत्क्षिप्त व्यंजन – का विस्तृत परिचय ।

कक्षा :– 10 वीं

नैवीं कक्षा में सिखाये गए व्याकरणांशों के साथ संधि, समास, विरामादि चिह्न, मुहावरे, लोकोक्ति, लिंग पहचान, वाक्यांश के लिए एक शब्द, कि–की का प्रयोग ।

सामर्थ्य सूची :–

कक्षा – 8 वीं (सातवीं कक्षा पर आधारित)

1. स्वतंत्र रुप से वर्ण, गिनती, बारहखडी और संयुक्ताक्षर की पहचान और उच्चारण ।
2. चित्र देखकर हिन्दी में शब्द बताना अथवा लिखना ।
3. सरल दैनिक श्ब्दों का हिन्दी में प्रयोग करना ।
4. सरल शब्द, वाक्यांश और वाक्य पढ़ना और लिखना ।
5. सरल वाक्यों को पढ़कर अर्थ ग्रहण करना ।
6. वाक्यों में व्याकरांश (जैसे– संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, विलोमादि) पहचानना ।
7. सरल शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्यों का कन्नड अथवा अंग्रेजी में अनुवाद करना ।
8. सीखे हुए हिंदी के कोई भी गीत या कविता का गायन ।

कक्षा – 9 वीं (आठवीं कक्षा पर आधारित)

1. सीखे हुए हिंदी के कोई भी गीत या कविता का गायन ।
2. वर्णमाला की सूक्ष्म जानकारी (जैसे– ह्रस्व, दीर्घ, अल्प–महाप्राण, अनुस्वार, विसर्गादि)
3. हिंदी संख्याओं की पहचान (लिखना–पढ़ना) ।
4. वाक्यों की रचाना करना, निबंध रचना करना ।
5. वाक्यों में व्याकरांश (जैसे– संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, क्रिया, विशेषण, क्रिया–विशेषण, प्रेरणार्थक, संधि, विलोमादि) पहचानना ।
6. पत्र लेखन कौशल ।
7. वाक्यों को कन्नड या अंग्रेजी में अनुवाद करना ।
8. परिच्छेद पढ़कर प्रश्नों के लिए उत्तर लिखना ।

सर्वधर्म प्रार्थना

तू ही राम है, तू रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ ।
तू ही वाहे गुरु, तू ईसू मसीह हर नाम में तू समा रहा ॥

तेरी जात पाक कुरान में, तेरा दर्श वेद पुराण में ।
गुरु ग्रंथ जी के बखान में, तू प्रकाश अपना दिखा रहा ॥

अरदास है कहीं कीर्तन, कहीं रामधुन कहीं आवाहन ।
विधि वेद का है यह सब रचन, तेरा भक्त तुझको बुला रहा ॥

विधि वेद जात के भेद से, हमें मुक्त करदो परम पिता ।
तुझे देख पाये सभी में हम, तुझे ध्या सके हम सभी जगह ॥

तेरे गुण नहीं हम गा सकें, तुझे कैसे मन में ला सकें ।
है दुआ यही तुझे पा सकें, तेरे दर पे सिर ये झुका हुआ ॥